www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 25 सितम्बर 2016 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 25 सितम्बर 2016 से 01 अक्तूबर 2016

आश्विन. कृ.–10 ● वि० सं०–2073 ● वर्ष 58, अंक 41, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 193 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,117 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

हंसराज मॉडल स्कूल पंजाबी बाग ने मनाया वैदिक धरोहर महोत्सव

डी.ए.वी. के पब्लिक स्कूल प्रणाली के सर्वप्रथम विद्यालय हंसराज मॉडल स्कूल, पंजाबी बाग, नई दिल्ली के गौरवशाली 50 वर्ष पूरे होने पर वर्ष 2016 को 'स्वर्णजयन्ती वर्ष' के रूप में मनाया जा रहा है। 'स्मृतियाँ और संकल्प' के रूप में वर्ष भर चलने वाले स्वर्णजयन्ती समारोहों की श्रृंखला में समाज में गिरते हुए संस्कारों एवं जीवनमूल्यों को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों में वेदों और जीवन मूल्यों के प्रति आस्था उत्पन्न करने के उद्देश्य से विद्यालय में 'वैदिक धरोहर महोत्सव' का आयोजन किया गया।

पूरे सप्ताह चलने वाले इस महोत्सव का शुभारम्भ यज्ञशाला में अग्निहोत्र के साथ किया गया। तत्पश्चात् लगभग 150 विद्यार्थियों एवं अध्यापकों ने विद्यालय के आस–पास की कॉलोनी में प्रभातफेरी निकाल कर समाज में वेदों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने का प्रयास किया। अलग–अलग कक्षाओं के साथ प्रतिदिन यज्ञशाला में हवन होता था। इस अवधि में कक्षानुसार विभिन्न गतिविधियों एवं प्रतियोगिताओं को आयोजन किया गया जिनमें वैदिक ऋषियों और महापुरुषों पर आधारित फैंसी ड्रैस प्रतियोगिता अनुकृति, 'ओ३म्' ध्वज निर्माण, यज्ञवेदिका अलंकरण, वैदिक ज्ञान प्रश्नोत्तरी सस्वर मन्त्रपाठ, वैदिक सूक्तियों पर आधारित पोस्टर मेकिंग 'संकल्पना' और वैदिक भजनों पर आधारित 'स्वरांजलि' प्रतियोगिताएँ प्रमुख थीं। दिनांक 23 अगस्त 2016 को अन्तर्विद्यालयीय प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया। जिनमें 'वैदिक टाइम्स' न्यूज पेपर डिज़ाइनिंग 'अंगवस्त्र रूपांकन' और 'कला संगम' प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

महोत्सव का समापन समारोह में डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति के महासचिव श्री आर.एस. शर्मा जी, श्री एस.आर अरोड़ा जी, विद्यालय के प्रबंधक श्री रवीन्द्र कुमार जी, प्रकाशन विभाग के निदेशक श्री एस.के. शर्मा जी एवं प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. छविकृष्ण शास्त्री जी उपस्थित थे। सभी गणमान्य महानुभावों ने प्रधानाचार्या श्रीमती हीमाल हंडू भट के साथ यज्ञशाला में हवन करने के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लिया। श्री आर.एस. शर्मा जी ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए स्वामी दयानन्द सरस्वती के द्वारा वेदोद्धार के लिए किए गए अथक प्रयासों की चर्चा की और श्रीमती हीमाल हंडू भट के नेतृत्व में विद्यालय में आए गुणात्मक परिवर्तन की प्रशंसा की।। वैदिक विद्वान् डॉ. छविकृष्ण शास्त्री जी ने बच्चों को 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म' का भाव समझाते हुए यज्ञ के व्यावहारिक और व्यापक रूप को स्पष्ट किया।

मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए श्री एस.के. शर्मा जी ने बच्चों को श्रावण मास का माहात्म्य बताते हुए यजमान शब्द का अर्थ स्पष्ट किया। उन्होंने डी.ए.वी. के यशस्वी प्रधान डॉ. पूनम सूरी जी को सम्पूर्ण भारत में चल रहे 900 डी.ए.वी. संस्थाओं के रूप में अनवरत चलने वाले ज्ञानयज्ञ का मुख्य यजमान बताते हुए यज्ञ का महत्व समझाया।

प्रतियोगिताओं में विजयी हुए विद्यार्थियों को पुरस्कार व प्रमाणपत्र प्रदान किए गए तथा शान्तिपाठ के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

डी.ए.वी. लारेंस रोड, अमृतसर, में वैदिक प्रचार सप्ताह

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, लॉरेंस रोड, अमृतसर में 19.08.16 से 26.08.16 तक वैदिक प्रचार सप्ताह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन रीजनल डॉयरेक्टर पंजाब ज़ोन ए डॉ. श्रीमती नीलम कामरा जी द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन, गायत्री मंत्र और डी.ए.वी. गान से किया गया। वेदों के सार से विद्यार्थियों को परिचित और शिक्षित करने के उद्देश्य से विद्यालय ने इस सप्ताह में अनेक गतिविधियों का आयोजन किया। इस सप्ताह 19.08.2016 उद्घाटन डॉ. राजू वैज्ञानिक द्वारा किए गये उद्घाटन के पश्चात् अलग–अलग दिवसों पर बच्चों को वैदिक सिद्धांतो पर आधारित क्विज, मंत्रोच्चारण तथा नुक्कड़ नाटक जैसी गतिविधियों में प्रेरित करके, वैदिक विद्वानों गायत्री मंत्र का महत्त्व, नैतिक मूल्यों का महत्त्व तथा वेद की प्रांसगिकता जैसे विषयों पर प्रवचन कराये गये।

25.08.2016 नुक्कड़ नाटक–विषय: मूल्य

मुख्यातिथि डॉ. राजू वैज्ञानिक जी ने छात्रों व अध्यापकों को संबोधित करते हुए वेदों के महत्त्व पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि वेदों में श्रद्धा व प्रेम से सुरक्षित विचार सार्वभौमिक भाई चारे की भावना को व्यक्त करते हैं। वे हमें ज्ञान, बुद्धि और समझ प्रदान करते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को इन पवित्र ग्रन्थ (वेदों) के विचारों को आदर्श जीवन जीने के लिए अपनाने का परामर्श दिया।

विद्यार्थियों को गायत्री मंत्र की महत्ता के बारे में बताते हुए कहा गया कि यह मंत्र बहुत अधिक महत्वपूर्ण मंत्र माना जाता है। गायत्री मंत्र की उत्पत्ति, इसके अर्थ और महत्त्व के बारे में विस्तृत ढंग से प्रत्येक शब्द का अर्थ बताते हुए समझाया गया।

वैदिक सिद्धातों एवं आर्य समाज पर आधारित एक क्विज़ के आयोजन में विद्यार्थियों ने सोत्साह भाग लिया। उन्होंने बहुत उत्सुकता से प्रश्नों के उत्तर दिए।

जीवन में नैतिक मूल्य के महत्त्व पर कहा गया कि मूल्य, व्यवहार को सुधारने, आदर की भावना पैदा करने और दूसरों से संबंध बढ़ाने में सहायता करते हैं। कुछ उद्धरण निर्देश देते हुए अच्छे जीवन मूल्यों को आत्मसात करने के लिए प्रेरणा दी गई।

एक नुक्कड़ नाटक जिसका विषय था– 'युवा पीढ़ी में हो रहे नैतिक मूल्यों का पतन' का मंचन किया गया। नाटक के माध्यम से बताया गया कि किस तरह समाज बदल रहा है और आधुनिकीकरण की तरफ बढ़ते हुए मनुष्य अपनी संस्कृति को भूल रहा है। अंत में यह अपील की गई कि हमें अपनी जड़ों और अपनी संस्कृति को नहीं भूलना चाहिए। विद्यार्थियों ने महान आत्माओं जैसे महात्मा हंसराज जी और स्वामी दयानंद सरस्वती जी द्वारा बताए गए मार्ग पर चलने की शपथ ली।

स्कूल की प्रधानाचार्या, डॉ. श्रीमती नीरा शर्मा जी ने कहा कि वह चाहती हैं कि उनके विद्यार्थी उच्च मूल्यों को धारण करते हुए जिम्मेदार नागरिक बनें।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – पूनम सूरी

www.thearyasamaj.org

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 25 सितम्बर 2016 से 01 अक्टूबर 2016

जीवन-यज्ञ अविच्छिन्न रहे

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

घृतस्य जूतिः समना सदेवा, संवत्सरं हविषा वर्धयन्ती।
श्रोत्रं चक्षुः प्राणोऽच्छिन्नो नो अस्तु, अच्छिन्ना वयमायुषो वर्चसः।।
अथर्व 16.58.1

ऋषिः **ब्रह्मा**। देवता **यज्ञः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● (**घृतस्य**) आत्मतेज–रूप घृत की (**जूतिः**) वेगवती धारा (**समना**) मन–सहित [और] (**सदेवा**) इन्द्रियों–सहित (**संवत्सरं**) शत–संवत्सर जीवन –यज्ञ को (**हविषा**) हवि से (**वर्धयन्ती**) बढ़ाती [रहे]। (**नः**) हमारा (**क्षोत्रं**) क्षोत्र, (**चक्षुः**) नेत्र [और] (**प्राणः**) प्राण (**अच्छिन्नः अस्तु**) अच्छिन्न रहे। (**वयं**) हम (**आयुष**) आयु से [तथा] (**वर्चसः**) वर्चस्विता से (**अच्छिन्नाः**) अच्छिन्न [रहें]।

● मनुष्य का जीवन सौ या सौ से भी अधिक वर्ष तक चलनेवाला एक यज्ञ है, जिसे 'शत–संवत्सर यज्ञ' भी कहा है जाता है। हम चाहते हैं कि हमारा यह यज्ञ निर्विघ्न चलता रहे। जैसे बाह्य यज्ञ तभी प्रवृत्त रह सकता है, जब उसमें यजमान और ऋत्विजों द्वारा निरन्तर हवि की आहुति पड़ती हे, वैसे ही हमारे इस शरीर यज्ञ के निर्बाध चलते रहने के लिए भी यह आवश्यक है कि इसका यजमान और इसके ऋत्विज् इसे हवि द्वारा बढ़ाते रहें। आत्मा ही इस का 'यजमान' है, मन 'ब्रह्म' है, प्राण 'उद्गाता' है, वाणी 'होता' है चक्षु 'अध्वर्यू' है। अतः आत्मा की आत्म–तेज–रूप घृत की आहुति, मन की प्रबल संकल्प की आहुति और सब ज्ञानेन्द्रियों एवं कर्मेन्द्रयों की अपनी–अपनी ज्ञान–कर्म–रूप हवियों की आहुति हमारे इस 'शत–संवत्सर' जीवन–यज्ञ में पड़ती रहनी चाहिए। यदि आत्मा, मन और इन्द्रिय–देव इस यज्ञ में सहायक नहीं होंगे, तो हमारा यह जीवन–यज्ञ समय पूर्व ही विच्छिन्न हो जाएगा। अतः हमारे क्षोत्र, नेत्र, प्राण आदि की शक्तियाँ प्रअक्षुण्ण रहनी चाहिएँ, जिससे हम चिर–काल तक कानों से शब्द, नेत्रों से रूप, नासिका से गन्ध, रसना से रस, त्वचा से स्पर्श का ग्रहण कर सकें और प्राण–अपना आदि की क्रियाओं को सम्यक् प्रकार से करते रहें। यदि हमारी ये इन्द्रियाँ दुर्बल, या अशक्त हो जाती हैं तो हमारे जीवन की वही अवस्था होगी, जो ऋत्विजों के दुर्बल, अशक्त या उदासीन हो जाने पर यज्ञ की होती है। यदि आयु से तथा वर्चस्विता से अच्छिन्न रहना चाहते हैं, तो हमें अपने जीवन–यज्ञ के यजमान और ऋत्विजों को सबल, सशक्त और निरन्तर जागरूक रखना होगा।

हे मेरे आत्मन्! हे मन! हे प्राण! हे इन्द्रिय–देवो! तुम जागते रहो, जीवन–यज्ञ में हवि डालते रहो, यज्ञ को प्रज्ज्वलित, प्रवृद्ध, अच्छिन्न तथा वर्चस्वी बनाये रहो। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

मानव जीवन गाथा

● महात्मा आनन्द स्वामी

पिछले अंक में स्वामी जी ने कहा कि आत्मा क्या है? आत्मा मनुष्य के शरीर मे निवास करती है। शास्त्रों ने इस शरीर में निवास करती है। शास्त्रों ने इस शरीर को आठ चक्रों वाली, नौ द्वारों वाली देवताओं की नगरी अयोध्या कहा है। आठ चक्र हैं। इस नगरी में रहने वाली सुन्दर स्त्री है बुद्धि। पाँच कर्मेन्दियाँ पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ इसके दस साथी हैं। प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान नाम के पाँच फनों वाला साँप ही इसकी रक्षा करने वाला सर्प है।

यदि सुख प्राप्त करना हो तो केवल एक उपाय से इन्द्रियाँ मन के वश में रहें, मन बुद्धि के वश में रहे, बुद्धि आत्मा के वश में रहें।

—अब आगे

प्यारी माताओ तथा सज्जनो!

मनुष्य के शरीर का वर्णन करने के पश्चात् मैंने आत्मा के सम्बन्ध में कुछ कहना आरम्भ किया था। मानव–शरीर का वर्णन करने में मैंने काफी समय लगा दिया था। इस समय के खर्च होने का मुझे दुःख नहीं, क्योंकि मानव–शरीर प्रभु की महानता का नमूना है, कि ज्यूँ–ज्यूँ उसको देखो, ज्यूँ–ज्यूँ इस पर विचार करो, त्यूँ–त्यूँ इसकी मानता प्रकट होती है। हर प्रकार से पूर्ण है यह शरीर। इसमें से एक या दो वस्तुएँ भी कम कर दीजिए तो सब काम गड़बड़ हो जायेगा।

हम लोग पहले लाहौर में थे तो लुहारी और भाटी दरवाजे के बीचवाले बाग में एक मुसलमान फकीर बैठा करता था। उसकी दोनों भुजाएं नहीं थीं। एक सड़क के किनारे वह बैठा रहता। कोई दयालु व्यक्ति आता तो उसके आगे पैसा–दो पैसा फेंककर आगे बढ़ जाता। मैंने भी उसे कई बार देखा। एक दिन ऐसे ही विचार आया कि इस व्यक्ति के हाथ नहीं–इन पैसों को यह उठाता कैसे है? उसके पास जाकर पूछा, "बाबा! धृष्टता क्षमा करना, तुम्हारे हाथ तो हैं नहीं, फिर इधर–उधर बिखरे हुए इन पैसों को उठाते कैसे हो?" उसने भाटी दरवाजे की ओर देखते हुए कहा, "वहाँ एक नानबाई है भाई मेरे! जब मैं देखता हूँ कि कुछ पैसे हो गये हैं तो उसे आवाज देता हूँ। वह आकर पैसे ले जाता है। उतने ही मूल्य की रोटी लाकर मेरे पास रख देता है।"

मेरे हृदय में एक और विचार आया; पूछा, "पर बाबा! तुम रोटी खाते कैसे हो?" उसने कहा, "पूछो मत, कैसे खाता हूँ। स्वयं तो मैं खा नहीं सकता। यहाँ बैठा–बैठा लोगों को पुकारता हूँ कि कोई मुझे रोटी खिला दे। तब कोई दयालु आ जाता है। मेरे पास बैठकर ग्रास तोड़–तोड़कर खिला देता है; और यदि कभी कोई ऐसा व्यक्ति न आए तो रोटी पड़ी ही रहती है, मैं बैठा ही रहता हूँ।"

मैंने कहा, "बाबा! रोटी तो खा लेते हो, पानी कैसे पीते हो? वह तो कई बार पीना पड़ता होगा।"

उसने कहा, "सामने यह घड़ा रखा है न! एक टाँग से उसे सहारा देता हूँ, दूसरी टाँग से उसको झुकाता हूँ, प्याले में पानी डाल लेता हूँ, फिर नीचे झुककर जैसे पशु पानी पीते हैं उसी प्रकार अपनी प्यास बुझा लेता हूँ।"

मैंने कहा, "बाबा! यह तो बाग है। रात्रि के समय यहाँ मच्छर भी होते होंगे। यदि कोई मच्छर लड़ जाये, तो उसे तुम हटाते किस प्रकार हो?" उसने एक दीर्घ निःश्वास छोड़कर कहा, "पूछो मत, किस प्रकार हटाता हूँ। हाथ मेरे हैं नहीं। माथे पर मच्छर बैठ जाए तो पृथिवी से टक्करें मारता हूँ। कान पर लड़ जाय तो भूमि पर कान रगड़ता हूँ। पीठ पर लड़ जाये तो सारे बाग में इस प्रकार लोटता हूँ जैसे मरने से पूर्व काटा हुआ पशु तड़पता है। उस समय पुकारकर कहता हूँ–मेरे अल्लाह! मुझे मार डाल। परन्तु मेरे–जैसे पापी की प्रभु क्यों सुनेगा!"

सुनो! यह केवल दो हाथों का मूल्य है जो इस शरीर में विद्यमान हैं। इसी प्रकार इसके प्रत्येक अंग का मूल्य है, प्रत्येक अंग का महत्त्व है। कोई भी ऐसी वस्तु नहीं जो व्यर्थ हो, जो गलत स्थान पर हो, अधूरी हो या ऐसी हो जिसके बिना निर्वाह हो सके। अथर्ववेद में एक–एक अंग की महिमा वर्णन की गई है इसके साथ ही शरीर को ऋषियों की यज्ञस्थली भी कहा गया। यह भी कहा गया कि सात ऋषि इसके अन्दर रहते हैं, उनकी यह तपोभूमि है। ऐसा है यह शरीर। यह घृणा की वस्तु नहीं। मानव–जीवन की गाथा का प्रारम्भ इससे होता है।

मैंने इस कथा का विषय रखा था, "मानव–जीवन की गाथा"। रणवीर जी मेरे भाषण की रिपोर्ट ले रहे हैं। उन्होंने इस कथा का शीर्षक रखा है "जीवन–गीत"। यह शीर्षक सुन्दर है। शरीर–रूपी सितार पर यह जीवन–रूपी गीत गाया जा रहा है। सितार अच्छी है। थोड़ा–सा छेड़ देने से इसकी तारें झनझना उठती हैं। परन्तु सितार को बजाने वाला, जीवन के इस गीत को गानेवाला तो कोई और है। सितार बहुत आवश्यक है; परन्तु यहं गानेवाला न गाये तो सितार का क्या मूल्य

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

www.thearyasamaj.org

क्रांतिद्रष्टा : ऋषि दयानन्द

● डॉ ज्वलन्त शास्त्री

पिछले अंक से आगे

स्वामी दयानन्द के समय तक ईसाई धर्म–प्रचारकों की शक्ति भी बहुत बढ़ गयी थी। हिन्दुओं की कठोर जातिप्रथा, बाल–विवाह, मूर्तिपूजा जैसी बुराइयों का उदाहरण देकर ईसाई प्रचारकों ने हिन्दू धर्म और हिन्दू सामाजिक संस्थाओं पर आक्रमण किया हुआ था। डॉ. अलेक्जेण्डर डफ के नेतृत्व में पादरी लोग भारतीयों को ईसाई बनाने में लगे हुए थे। उनका प्रचार–कार्य विशेषरूप से कलकत्ता, मद्रास और बम्बई में पूरे जोर पर था। भारतीयों को ईसाई बनाने की दिशा में पहले कदम के रूप में देशी भाषाओं के मुकाबले अंग्रेजी का वर्चस्व स्थापित करने का अंग्रेजों की सरकार ने फैसला कर लिया था। डॉ. डफ और मैकाले के प्रभाव में आकर लार्ड विलियम बैंटिक की सरकार ने अंगेजी साहित्य के प्रसार को ब्रिटिश सरकार का प्रमुख लक्ष्य निर्धारित किया। मिशनरियों ने अंग्रेजी शिक्षा देने के लिए अनेक स्कूलों की स्थापना की। स्कूलों, कॉलिजों और विश्वविद्यालयों की स्थापना करके मिशनरियों ने भारत में अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त भारतीयों का एक ऐसा वर्ग तैयार किया जो पाश्चात्य संस्कृति और विचारों से प्रभावित था। राजा राममोहन राय के नेतृत्व में ब्रह्मसमाज ने आधुनिक यूरोप, विशेष रूप से इंग्लैण्ड के आधुनिक सामाजिक आदर्शवाद को सराहना शुरू कर दिया था। इसका प्रभाव यह पड़ा कि अनेक भारतीयों ने अपने पूर्वजों के धर्म को छोड़कर ईसाई बनना शुरू कर दिया। मिशनरियों ने राजा राममोहन राय तक को ईसाई बनाने की कोशिश की थी। ईसाई लोग अपने को भारतीयों से श्रेष्ठ समझते थे। मिशन स्कूलों में बच्चों को बताया जाता था कि भारतीयों के ऊपर यूरोपियनों की श्रेष्ठता का कारण ईसा मसीह की कृपा का प्रसाद है। ईसाई धर्म–प्रचारक हिन्दू समाज की बुराइयों की आलोचना करते हुए गर्व से बताता था कि उसका समाज इन अभिशापों से मुक्त है। ईसाई धर्म ग्रंथों की हिन्दू धर्मग्रंथों से तुलना करते हुए वह यह बताता था कि प्रभु ईसा का मार्ग ही श्रेष्ठ है। वे वेदों की निंदा करते हुए यह कहते थे कि उनमें केवल मूर्खतापूर्ण कर्मकाण्ड बताये गये हैं। किन्तु भारतीय समाज ईसाई मिशनरियों के इस धर्म–परिवर्तन अभियान के विरुद्ध था। हिन्दूधर्म छोड़कर ईसाई बनने वाले व्यक्ति के बारे में समझा जाता था कि वह अपने पूर्वजों के धर्म से ही विमुख नहीं हुआ, बल्कि अपने पूरे समाज से विमुख हो गया। ऐसा माना जाता था कि जो व्यक्ति ईसाई बनता है वह गोमांस और मदिरा का भी सेवन करता है। आधुनिक शिक्षा से शिक्षित यूरोपीय वेश–भूषा से मण्डित जो युवक ईसाई धर्म ग्रहण करते थे, वे अपने पूर्वजों (शंकर, विष्णु, इन्द्र प्रभृति देवों और कृष्ण) के आचरण से (जो पुराणों में वर्णित है) अपने को हीन–भाव ग्रस्त और लज्जित महसूस करते थे।

(3) इस्लाम ने भी हिन्दू धर्म पर जेहाद बोल रखा था। वह हिन्दू धर्म की आलोचना अत्यन्त कठोर भाषा में करता था। वह मूर्तिपूजा तथा वैदिक और पौराणिक कर्मकाण्ड की निंदा करता था। वे हिन्दुओं की जातीय सामाजिक व्यवस्था के भी उग्र आलोचक थे। मिशनरियों की भाँति इस्लाम ने भी हिन्दुओं को मुसलमान बनाने का प्रयत्न जारी रखा था। छह सात सौ वर्षों की इस्लामी शासकों की नीतियों के कारण स्वामीजी के समय में मुसलमानों की आबादी देश में दस करोड़ से ज्यादा हो गई थी। ईसाइयों के भारत आगमन से सैकड़ों वर्ष पूर्व इस्लाम के मुजाहिदीन भारत आ चुके थे। एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में कुरान लेकर हिन्दुओं को मुसलमान बनाने का अभियान सम्पूर्ण भारत खण्ड (आर्यावर्त्त) में (आज के अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बंगलादेश सहित भारत में) एक–तिहाई मुस्लिम आबादी का आकार ले चुका था। स्वामीजी के समय में हिन्दुओं और मुसलमानों का परस्पर वैमनस्य भी अंग्रेजों की कूटनीति के कारण बहुत बढ़ चुका था (आगे चलकर इसकी परिणति भारत–विभाजन के रूप में हुई)। भारत सरकार के खुफिया विभाग की रिपोर्ट और गोपनीय सरकारी कागजात से पता चलता है कि अंग्रेजी हुकूमत मुसलमानों को हिन्दुओं को लूटने और गाली देने के लिए उकसाती थी।

स्वामीजी ने हिन्दू धर्म की तत्कालीन मान्यताओं तथा ईसाइयों और मुसलमानों की गतिविधियों को बहुत गहराई से देखा व समझा था। उन्होंने अपने शास्त्रीय अध्ययन, वेदविद्या पर असाधारण अधिकार, योगनिष्ठ तपोमय जीवन और निष्कलंक ब्रह्मचर्य शक्ति के बल पर उपर्युक्त तीन विरोधी शक्तियों से अकेले ही लोहा लिया। गुरु विरजानन्द सरस्वती से प्राप्त आर्ष गन्थों के पांडित्य ने उन्हें हिन्दूधर्म के मूल 'वेदविद्या' तक पहुँचा दिया। चारों वेदों का पर्याप्त समय तक विचार–विमर्श करने के बाद ऋषि दयानन्द इस परिणाम पर पहुँचे कि यदि भारतीय धर्म (वैदिक धर्म) को शुद्ध किया जाए तो किसी धर्म के लिए यहाँ कोई स्थान नहीं रह जाएगा। वेदों, उपनिषदों तथा गौतम, कणाद, कपिल, पतञ्जलि और व्यास के मौलिक दर्शन शास्त्रों से आलोकित दयानन्द के हृदय में बाइबिल, कुरान और पुराणों के लिए कोई श्रद्धा नहीं बची। 'वेदों की ओर लौटो' की उनकी तुमुल ध्वनि एकबारगी सम्पूर्ण आर्यावर्त्त में गूँज गई। स्वामीजी के मन में ऐसे लोगों और मत–मतान्तरों के लिए कोई स्थान नहीं बचा था, जिन्होंने पिछले दो–तीन हजार वर्षों के दौरान भारतीय वैदिक धर्म के पतन में (पौराणिक धर्म के रूप में परिवर्तित होने में) योगदान दिया था। स्वामीजी के गुरु ने उन्हें यह शिक्षा दी थी कि **"बहुत समय से भारतवर्ष में वेदों की शिक्षा देना बन्द हो गया है। जाओ, वेदों और वैदिक शास्त्रों की शिक्षा दो और उनके प्रकाश से उस अन्धकार को दूर करो, जिसे मिथ्या धर्मों (मत–मतान्तरों के अर्थ में) ने फैलाया है।"** अतः दयानन्द ने वेदों के सन्देश को प्रचारित–प्रसारित करना प्रारंभ कर दिया। इस प्रकार स्वामीजी द्वारा हिन्दू धर्म के सुधार आन्दोलन ने एक सकारात्मक रूप ग्रहण किया। वैदिक धर्म के बारे में स्वामीजी के ओजस्वी प्रवचनों तथा शास्त्रार्थों ने दुधारी तलवार का काम किया। उसने जहाँ हिन्दू धर्म को अन्धविश्वासों के मकड़जाल से मुक्त किया वहाँ ईसाइयों और इस्लाम मतावलम्बियों द्वारा धर्म–परिवर्तन की वेगवती धारा को भी रोका। परमात्मा के इकलौता पुत्र होने तथा मुक्तिदाता और परित्राता के रूप में हजरत ईसा मसीह के व्यक्तित्व और कृतित्व पर स्वामीजी ने तार्किक आक्षेप किये। इस्लाम के अन्तिम पैगम्बर हजरत मोहम्मद साहब की जीवन–शैली, जन्नत, दोजख और काफिरों के सन्दर्भ में कुरान की युक्ति–शून्य आज्ञाओं की भी स्वामीजी ने खिल्ली उड़ाई। इसके साथ ही स्वामीजी ने ब्राह्मण धर्म को भी चुनौती दी। उन्होंने उचित ही उद्घोष किया कि तीर्थयात्रा और गंगास्नान का कोई धार्मिक महत्त्व नहीं है। देवी–मन्दिरों में पशुबलि एक पापपूर्ण कृत्य है। वैष्णवों का महान् धार्मिक ग्रंथ भागवत पुराण अनैतिक है। मूर्तिपूजा वेदसम्मत नहीं, एक धर्माडम्बर मात्र है, जिससे ईश्वर–प्राप्ति का कोई सम्बन्ध नहीं है, यह जन्म–मरण चक्र से मुक्ति के मार्ग में सीढ़ी नहीं बल्कि एक गहरी खाई है जिसमें गिरकर मनुष्य अपना जीवन व्यर्थ गँवाता है।

दयानन्द के विचारों से ब्राह्मणों में बड़ा क्षोभ व्याप्त हुआ और वे उनकी कटु आलोचना करने लगे। किन्तु ब्राह्मणों के आक्रमण से दयानन्द का आन्दोलन दब नहीं सका। स्वामीजी ने मूर्तिपूजा के साथ–साथ बहुदेवतावाद का भी प्रबल खण्डन प्रारंभ किया। उन्होंने यह बताया कि वेद, वेदान्त दर्शन और उपनिषदों में परमेश्वर (ब्रह्म) में जिन गुणों का होना बताया जाता है, उन गुणों से युक्त केवल एक ही ब्रह्म है और वह सच्चिदानन्दस्वरूप निराकार, सर्वशक्तिमान्, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर–अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है। (आर्य समाज का द्वितीय नियम)।

दयानन्द ने यह भी अनुभव किया कि ब्राह्मणों ने जो अपना गढ़ खड़ा कर लिया है, वही हिन्दूधर्म में घुसी बुराइयों की जड़ है। अतः उन्होंने बिना किसी लाग–लपेट के स्पष्ट सत्य बोलकर इस गढ़ की जड़ों को हिला डालने का संकल्प किया। उन्होंने केवल जन्म के आधार पर प्राप्त ब्राह्मणों के अधिकार पर सवालिया निशान लगाये। जब ब्राह्मणों ने अपने अधिकारों को तर्कसंगत बताने के लिए शास्त्रीय प्रमाण का सहारा लिया तो स्वामीजी ने स्वयं ही मनुस्मृति का प्रमाण देकर यह सिद्ध किया कि ब्राह्मण को वेदों का ज्ञाता होना चाहिए और जो व्यक्ति इस स्तर तक नहीं पहुँच पाता, वह ब्राह्मण कहलाने के योग्य नहीं है।

अध्यापक आवास, स्टेशन रोड
अमेठी, उत्तर प्रदेश–227405

www.thearyasamaj.org

सत्यार्थ सन्देश

● डॉ. सोमदेव शास्त्री

पिछले अंक से आगे

समुल्लास:– सत्यार्थ प्रकाश को 14 विभागों में विभक्त किया गया है। इन विभागों का नाम अध्याय–पाद–सूक्तादि न करके समुल्लास रखा है जो हमारे उल्लास–प्रसन्नता ओर उन्नति का कारण हो सकें।

विषय:–

प्रथम समुल्लास में ईश्वर के नामों की व्याख्या, द्वितीय में सन्तानों की शिक्षा, तृतीय में पठन–पाठन व्यवस्था, चतुर्थ में गृहस्थाश्रम, पंचम में वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम का विवेचन, षष्ठ में राजधर्म, सप्तम में ईश्वर, जीव और वेद, अष्टम में सृष्टि उत्पत्ति, नवम में विद्या–अविद्या, बन्ध–मुक्ति, दशम में आचार–अनाचार, भक्ष्याभक्ष्य, एकादश में आर्यावर्तीय मत मतान्तर, द्वादश में चार्वाक, बौद्ध, जैन, त्रयोदश में ईसाईमत, चतुर्दश में मुसलमानों के इस्लाम मत की समीक्षा की गई है। तथा अन्त में स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश का वर्णन है।

विषय विवेचन:–

सुविधा के दृष्टि से सामान्य ज्ञान रखने वाले व्यक्ति को पहले 2–3–4–5–6–10 समुल्लासों का प्रथम अध्ययन करना चाहिये। इन समुल्लासों में बालकों की शिक्षा, पठन–पाठन की विधि, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास आश्रम का वर्णन, राजनीति तथा भक्ष्याभक्ष्य का वर्णन किया गया है। तत्पश्चात् 1–7–8–9 समुल्लासों में ईश्वर के नाम, ईश्वर, जीव और वेद, सृष्टि की उत्पत्ति तथा मुक्ति आदि दार्शनिक विषयों का चिंतन किया गया है। इसके बाद 11,12,13,14 समुल्लास जिन में पहले 11वें समुल्लास में वैदिक धर्म के स्थान पर शैव–शाक्त–वैष्णवादि सम्प्रदायों तथा तथाकथित हिन्दू धर्म के नाम पर प्रचलित पाखंड एवं मिथ्या मान्यताओं का खंडन है। 12वें समुल्लास में चार्वाक–बौद्ध–जैन आदि मतों के सत्यासत्य का विवेचन है। तेहरवें समुल्लास में ईसाई और चौदहवें समुल्लास में इस्लाम की समीक्षा की गयी है। सभी मतों की समीक्षा करने में ऋषि की भावना क्या थी यह उनके शब्दों से ज्ञात होता है जो उन्होंने भूमिका में लिखा है "यद्यपि मैं आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुआ हूँ, बसता हूँ तथा जैसे इस देश के मत मतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हूँ वैसे ही दूसरे देशस्थ वा मतवालों के साथ भी बर्तता हूँ। जैसा स्वदेश वालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय में बर्तता हूँ, वैसा विदेशियों के साथ भी तथा सब सज्जनों को भी बर्तना योग्य है।"

ग्रंथ का प्रभाव:–

यह ग्रंथ कितना महत्वपूर्ण और लोकप्रिय हुआ है यह इसके अनुवाद एवं टीकाओं से विदित होता है। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी कहा करते थे कि मैंने 18 बार सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा है। किन्तु जब भी पढ़ता हूँ तब मुझे इसमें नयी बात मिलती है। इस ग्रंथ को पढ़कर अनेक देशभक्तों ने राष्ट्र की बलिवेदी पर अपने प्राणों की आहुति दे दी। अन्धविश्वासियों ने अन्धविश्वास छोड़ दिया। तथा अनेक सम्प्रदायों एवं मतवादियों ने अपने सम्प्रदाय और मतों की तर्कसंगत व्याख्या करना प्रारंभ कर दिया।

सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन:–

परोपकारिणी सभा अजमेर से इसके अनेक संस्करण निकले। इसके अतिरिक्त, रामलाल कपूर ट्रस्ट, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली, आर्य साहित्य मण्डल अजमेर, गुरुकुल आमसेना, हरयाणा साहित्य संस्थान गुरुकुल, झज्जर, दयानन्द संस्थान दिल्ली, गोविन्दराम हासानन्द दिल्ली, विरजानन्द वैदिक संस्थान गाजियाबाद, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली आदि अनेक संस्थाओं द्वारा यह ग्रंथ प्रकाशित हुआ है।

पद्य में सत्यार्थ प्रकाश:–

जब सिन्ध प्रान्त की मुस्लिम लीग सरकार ने सन् 1943 में सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्दश समुल्लास पर प्रतिबंध लगाया, तब सब जगह प्रतिबंध के विरोध में आवाज उठी, सम्मेलन हुए, आन्दोलन किये गये। सिन्ध प्रान्त के गाँव–गाँव में सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार किया गया, आबाल वृद्ध इसे कण्ठस्थ कर लें। इस भावना से प्रेरित होकर गद्य का कण्ठस्थ करन क्लिष्ट होता है, इसलिए सत्यार्थ प्रकाश की पद्य में रचना आर्य महाकवि पं. जयगोपाल शास्त्री ने की। जो विक्रम संवत् 2003 में पं. रामगोपालजी शास्त्री के सम्पादकत्व में तीन समुल्लास तक प्रकाशित हुआ। जिसका द्वितीय संस्करण सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर से सन् 1999 में प्रकाशित हुआ।

प्रान्तीय भाषा में अनुवाद:–

सन् 1898 में अमृतसर से भी आत्माराम अमृतसरी कृत पंजाबी अनुवाद (गुरुमुखी लिपि में) प्रकाशित हुआ। सन्1899 में पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा श्री पं. रैमलदास और आत्माराम कृत उर्दू अनुवाद प्रकाशित हुआ। सन्1901 में वैदिक यन्त्रालय अजमेर द्वारा श्री मोतीलाल भट्टाचार्य कृत बंगाली अनुवाद प्रकाशित हुआ। सन्1905 में जगदीश्वर प्रेस बम्बई से श्री मच्छाशंकर जयशंकर द्विवेदी का गुजराती अनुवाद प्रकाशित हुआ। इसे बाद अन्य गुजराती अनुवाद भी प्रकाशित हुए। सन्1907 में बम्बई से श्री दास विद्यार्थी, श्रीपाद दामोदर सातवलेकर तथा सत्यव्रत स्नातक कृत मराठी अनुवाद प्रकाशित हुआ। इस अनुवाद के अन्य भी अनेक संस्करण निकले। सिन्ध प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा ने श्री जीवनलाल आर्य कृत सिन्धी भाषा में अनुवाद प्रकाशित किया। गोविन्दराम हासानन्द, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा अजमेर निवासी श्री हकीम वीरूमल आर्यप्रेमी ने भी बाद में सिन्धी भाषा में अनुवाद प्रकाशित किये। सन् 1927 और 1937 में श्री श्री वत्स पाण्डा कृत उड़िया भाषा में अनुवाद प्रकाशित हुआ। सन्1973 में गुरुकुल आमसेना ने श्री पं. लक्ष्मीनारायण शास्त्री कृत उड़िया अनुवाद प्रकाशित किया। सन् 1975 में आर्य समाज गौहाटी ने पं. परमेश्वर कोती कृत असमिया भाषा में अनुवाद प्रकाशित किया। सन्1931–1936 तथा 1963 में आर्य समाज दार्जिलिंग द्वारा दिलुसिंग राई कृत नेपाली अनुवाद प्रकाशित हुआ। सन् 1925 में आर्य समाज मद्रास ने श्री एम. आर. जम्बुनाथन कृत तमिल अनुवाद प्रकाशित किया जिसके अन्य संस्करण भी निकले हैं। सन् 1912 में आर्य समाज हैदराबाद और आर्य समाज प्रतिनिधि सभा हैदराबाद ने श्री आदिपूड़ि सोमनाथ राव, पं. गोपालराव, पं. राजरत्नाचार्य एवं पं. गोपदेव शास्त्री कृत तेलुगु अनुवाद प्रकाशित किया। सन् 1932 तथा 1974 में श्री भास्कर पंत, पं. सत्यपाल स्नातक, पं. सुधाकर चतुर्वेदी कृत कन्नड़ अनुवाद आर्य समाज बैंगलोर ने प्रकाशित किया। सन् 1933 में ब्रह्मचारी लक्ष्मणकृत मलयालम अनुवाद प्रकाशित हुआ। सन् 1978 में पं. नरेन्द्र भूषण का किया हुआ इसी भाषा में अनुवाद प्रकाशित हुआ। दयानन्द जन्मशताब्दी विक्रम संवत्1981 में पं. शंकरदेव पाठक कृत संस्कृत अनुवाद प्रकाशित हुआ।

विदेशी भाषाओं में अनुवाद:–

विदेशी भाषाओं में सन् 1906 में डॉ. चिरंजीव भारद्वाज द्वारा किया हुआ अंग्रेजी अनुवाद लाहौर से प्रकाशित हुआ। इसके बाद श्री मास्टर दुर्गादास तथा पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय कृत अंग्रेजी अनुवाद भी प्रकाशित हुए।

सन् 1930 में प्रतिनिधि सभा पंजाब ने डॉ. दौलतराम देव कृत जर्मन भाषा में अनुवाद प्रकाशित किया। सन् 1940 तथा 1975 में बेल्जियम तथा आर्य सभा मॉरिशस ने लुई मौरा नामक महिला कृत फ्रेंज भाषा में अनुवाद प्रकाशित किया। सन् 1958 में हांगकांग से डॉ. चाऊ कृत चीनी भाषा में अनुवाद प्रकाशित हुआ। सन् 1959 में आर्यसमाज रंगून ने बौद्ध भिक्षु ऊ किनिया कृत बर्मी भाषा में अनुवाद प्रकाशित किया। पं. कालीचरण शर्मा ने अरबी भाषा में सत्यार्थ प्रकाश के कुछ अंशों का अनुवाद किया था। अफ्रीका की स्वाहिली भाषा में भी अनुवाद हुआ है।

ब्रेल लिपि:–

नेत्रहीन व्यक्तियों के लिए सत्यार्थ प्रकाश का ब्रेल लिपि में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने मुद्रण कराया है। यह अनेक खण्डों में विद्यमान है। पुस्तक में सत्यार्थ प्रकाश के विषयों का विवेचन किया जो डॉ. कुसुमलता आर्य प्रतिष्ठान गाजियाबाद से 1997 में प्रकाशित हुआ है। डॉ. भवानीलाल भारतीय ने आर्य समाज के इतिहास के पांचवें भाग के पृष्ठ 41 से 66 तक इस ग्रंथ के विषय में विस्तार से लिखा है। विस्तृत जानकारी के लिए जिज्ञासु पाठकों को उपरोक्त ग्रंथों को तथा इन प्रकरणों का अध्ययन करना चाहिए।

आक्षेप और उत्तर:–

अनेक सम्प्रदायों के व्यक्तियों ने अपने मतों की पुष्टि के लिये सत्यार्थ प्रकाश के विरोध में ग्रंथ लिखकर भी इस ग्रंथ के प्रचार प्रसार में योगदान किया है। इनके द्वारा लिखे हुए विरोधी ग्रंथों को पढ़कर जो लोग सत्यार्थ प्रकाश को नहीं जानते थे वे लोग भी सत्यार्थ प्रकाश को जान गये और पढ़ने लगे। पं. ज्वालाप्रसाद मिश्र मुरादाबादी ने "दयानन्दतिमिर भास्कर" लिखकर सत्यार्थ प्रकाश का खंडन किया जिसका मुँहतोड़ जबाव पं. तुलसीराम स्वामी ने "भास्कर प्रकाश" नामक ग्रंथ लिख कर दिया। पं. ज्वालाप्रसाद की पुनः आक्षेप करने की हिम्मत नहीं हुई। उनके भाई पं. बलदेव प्रसाद मिश्र ने "धर्म दिवाकर" लिखकर "भास्कर प्रकाश" की आलोचना की। उसका भी तार्किक उत्तर पं. तुलसीराम स्वामी ने "दिवाकर प्रकाश" लिखकर दिया। इनकी तर्क एवं प्रमाण से युक्त लेखन शैली को देखकर दोनों भाइयों (पं. ज्वालाप्रसाद और पं. बलदेवप्रसाद) ने मौन धारण कर लिया। पुनः आपेक्ष करने का कभी दुःसाहस नहीं किया। पं. कालुराम शास्त्री ने "सत्यार्थ प्रकाश" की छीछालेदड़ नामक पुस्तक लिखी, जिसका उत्तर पं. रामदुलारेलाल ने "सत्यार्थ प्रकाश का चमत्कार" नामक पुस्तक द्वारा किया जो आर्य समाज चावड़ी बाजार दिल्ली से सन्1930 में प्रकाशित हुई। पं. माधवाचार्य ने "सत्यार्थ प्रकाश की छीछालेदड़" पुस्तक लिखी जिसका उत्तर डॉ. श्री राम आर्य कासगंज (उ.प्र.) ने दिया। इस प्रकार सत्यार्थ प्रकाश पर होने वाले आक्षेपों का उत्तर समय–समय पर वैदिक विद्वान् देते रहे। इस महान् ग्रंथ में विद्यमान विश्व कल्याण विषयक ज्ञान का लाभ जन सामान्य भी प्राप्त कर सकें इसी दृष्टि से इस लघु पुस्तिका के द्वारा यह प्रयास किया गया है।

साभार

www.thearyasamaj.org

यज्ञीय पञ्चाङ्ग (2) हविर्द्रव्य गतांक से आगे

● पण्डित वेदप्रकाश शास्त्री

हविर्द्रव्य को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है–

(क) समिधा

(ख)हवनीय पदार्थ।

(क)**समिधा** – यज्ञ में समिधा का महत्वपूर्ण स्थान है। यदि यह कहा जाय कि यज्ञ का आधार समिधा है तो अत्युक्ति न होगी। क्योंकि हवनीय पदार्थों को भस्मसात् करने का साधन समिधा है अर्थात् समिधा पूर्णरूप से जल कर साकल्य को भी साकल्येन भस्म कर दे। अतः समिधा की गणना हविर्द्रव्यों में न होने पर भी इसकी महत्ता की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

(समिधा का विस्तृत विवेचन "यज्ञ समिधा" शीर्षक के अन्तर्गत किया गया है।)

(ख)**हवनीय पदार्थ** – हव्य पदार्थों का वर्णन विभिन्न ग्रन्थों में विस्तार से किया गया है–

1. **तैलं दधि पय सोमो यवागूरोदनं घृतम्।**
तण्डुला:फलमापश्चदशद्रव्याण्युक्तान्यत:।।

स्मार्तोल्लास

तैल, दही, दूध, सोमलता (रस), यवागू, भात, घी, कच्चे चावल, फल और जल ये दश द्रव्य हैं। द्रव्य से अभिप्राय घृत, चरु, हव्य अर्थात् हवन सामग्री है।

2. स्वस्थ पोषाहार युक्त द्रव्यों का पुरोडाश, चरु, मोदक, मोहन भोग, क्षीरपाक, द्विदलों की पिष्टि से निर्मित पक्वापक्वान्न, सक्तु, खीर, खिचड़ी आदि विशेष हवनीय पदार्थ हैं जो विशिष्ट यज्ञों हेतु तैयार किए जाते हैं।

3. (क) प्रकृतिस्थ उत्पत् तैल प्रधान हवनीय द्रव्य–बादाम, नारियल, लौंजे, अक्षोट(अखरोट), काजू, जर्तिल (जैतून), तिल आदि।

(ख) मिष्ट प्रधान शुष्क फल–(i) खजूर, छुहारा, किशमिश, मुनक्का आदि।

(ii) शक्कर, गुड़, शहद आदि।

4. **तदेव ह्यनले हुत्वा प्राप्नोति बहुसाधनम्।**
अन्नादि हवनान्नित्यमन्नाद्यं च भवेत् सदा।।

अन्नों का नित्य हवन करने से पृथिवी पर पर्याप्त मात्रा में अन्न पैदा होता है।

5. **रक्तचन्दनमिश्रं तु सघृतं हव्यवाहने।**
हुत्वा गोमयमाप्नोति सहस्र गोमयं द्विज:।।

रक्तचन्दन को मिला कर अग्नि में हजार बार आहुति देने से पशुओं से घी, दूध और गोबर भली प्रकार प्राप्त होता है।

यज्ञीय द्रव्यों की वैकल्पिक व्यवस्था

घृतार्थे गोघृतं ग्राह्यं तदभावे तु माहिषम्।
आजं वा तदभावे तु साक्षात् तैलमपीष्यते।।
तैलाभावे ग्रहीतव्यं तैलं जर्तिलसम्भवम्।
तदभावेऽतसस्नेह: कौसुभ: सर्षपोद्भव:।।
वृक्षस्नेहीऽथवा ग्राह्य: पूर्णलाभे पर: पर:।
तदभावे यवव्रीहिश्यामाकान्यतमोद्भव:।।

–मण्डन

यज्ञ में गाय का घी सर्वोत्तम है। वह न मिले तो भैंस का लें। उसके अभाव में बकरी का, वह भी न हो तो शुद्ध तेल जर्तिल (जैतून), तीसी (अलसी), कौसुम्भकसूम–कुसुम या सरसों का तेल लें। वह भी प्राप्त न हो तो गोंद या जौ, चावल, सावां आदि की चिकनाई से काम चलावें।

यथोक्तवस्त्वसम्पत्तौ ग्राह्यं तदनुकारयेत्।
यवानामिव गोधूम: व्रीहीणामिव शालय:।।
आज्यं द्रव्यमनादेशे जुहोतिषु विधीयते।
दध्यलाभयेय: कार्यं मध्वलाभे तथा गुड:।।
घृतं प्रतिनिधिं कुर्यान्पयो वा दधि वा बुध:।
आज्यहोमेषु सर्वेषु गव्यमेव घृतं भवेत्।।

होम आदि कार्य में विहित वस्तु प्राप्त न होने पर उसी के तुल्य अन्य पदार्थ से काम चलावें। जैसे जौ के न मिलने पर गेहूँ, चावल न मिलने पर शालि के चावल, दही के अभाव में दूध, मधु के अभाव में गुड़, घी में अभाव में दूध या दही लेवें।

हविष्यान्नं तिला भाषा नीवारा व्रीहयो यवा:।
इक्षव: शालयो मुद्गा पया दधि घृतं मधु।।
हविष्येषु यवा मुख्यास्तदनु वीहय: स्मृता:।
व्रीहीणामप्यलाभे तु दध्ना वा पयसापि वा।।
यथोक्तवस्त्व सम्पत्तौ ग्राह्यं तदनुकल्पत:।
यवानामिव गोधूमा व्रीहीणामिव शालय:।।

तिल, उड़द, नीवार (वन्य–चावल), भदौह धान, जौ, ईख, बासमती चावल, मूंग, दूध, दही, घी और शहद ये हवि हैं।

हवि पदार्थों में जौ मुख्य है उसके बाद धान। यदि धान न मिले तो दूध या दही से काम चलावें।

कही हुई वस्तु न मिले तो उसके स्थान पर अनुकल्प अर्थात् उसके समान गुण वाली वस्तु ले लेनी चाहिए।

महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट हव्यपदार्थ

महर्षि दयानन्द ने प्रथम बार हव्य पदार्थों का अत्यन्त वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विचार किया और उन्हें चार भागों में विभाजित किया–

(क)सुगन्धित–केशर, अगर, तगर, कर्पूर, गुग्गल, चन्दन, लौंग, इलायची आदि।

(ख)पुष्टिकारक–घृत, दूध, फल, अन्न–चावल, जौ, मूंग, उड़द, तिल, मखाने आदि।

शुष्कफल–बादाम, काजू, अखरोट, जर्तिल (जैतून), नारियल, लौंजे आदि।

(ग) मिष्ट–शहद, शक्कर, दाख, छुहारा, किशमिश, खर्जूर, गुड़ आदि।

(घ) रोगनाशक–गिलोय, ब्राह्मी, शंखपुष्पी, मुलहठी, सोंठ, रक्तचन्दन, तुलसी आदि।

हवन सामग्री में इन चारों प्रकार के पदार्थों का सन्तुलन बना रहे, इसीलिए महर्षि ने इनका चार भागों में विभाजन किया है। अपनी सामर्थ्य के अनुसार सभी प्रकार के पदार्थ सम्मिलित करने चाहिए।

आजकल प्रायः बनी बनायी हवन सामग्री का उपयोग किया जाता है। अतः उसमें अग्रलिखित वस्तुएं बाजार से लेकर अवश्य मिलाएं–

गुग्गल, कर्पूर, लौंग, इलायची, चन्दनचूरा, चावल, जौ, मखाने, शक्कर/चीनी/गुड़, घी, छुहारा, बादाम, अखरोट आदि। मात्रा इसलिए नहीं लिखी गयी, जिससे यजमान अपनी श्रद्धा, सामर्थ्य और आवश्यकतानुसार पदार्थ मिला सकें। इसमें न्यूनाधिक्य भी हो सकता है। परन्तु चारों प्रकार के पदार्थों का प्रयोग करना ही प्रशस्य एवं समीचीन है और वैज्ञानिक भी।

(क्रमशः)

4–E, कैलाश नगर
फाजिलका–152123 (पंजाब)
9463428299

स्वाध्याय की महती महिमा

● आचार्य नवानन्द आर्य

<u>स्वाध्याय की परिभाषा</u>:– सु पूर्वक आङ् उपसर्ग से इङ अध्ययने धातु से इङश्च (अष्टाध्यायी 3/3/21) सूत्र से घञ् प्रत्यय करने से स्वाध्याय शब्द सिद्ध होता है। स्वाध्याय से अभिप्राय यह है कि ईश्वरीय, आध्यात्मिक व जीवन सम्बन्धी वेदादि शास्त्रों का अध्ययन, चिन्तन, मनन करना।

स्वस्य अध्ययनं स्वाध्यायः – इस व्युत्पत्ति के आधार पर आत्मनिरीक्षण अथवा आत्मचिन्तन करना स्वाध्याय है।

योगदर्शन के भाष्यकार व्यास जी ने योग शास्त्र के 2/1 के भाष्य में स्वाध्याय की परिभाषा करते हुए कहा है:– **स्वाध्याय: प्रणवादिपवित्राणां जपो मोक्षशास्त्राध्ययनं वा।** अर्थात् ओ३म् आदि ईश्वरीय नामों व गायत्री आदि मंत्रों का जप तथा मोक्षसाधक वेदादिशास्त्रों का अध्ययन करना स्वाध्याय कहलाता है। स्वाध्याय आत्मा का उन्नतिकारक, ज्ञानवर्धक एवं जीवननिर्माण का अपूर्व साधन है। स्वाध्याय को योगसिद्धि का एक अंग माना है। अतः स्वाध्याय नियमपूर्वक प्रतिदिन अवश्य करना चाहिए।

<u>स्वाध्याय के प्रमुख साधन</u>:– स्वाध्याय के साधनों में प्रथम साधन भाषा का ज्ञान है। जो व्यक्ति मोक्ष शास्त्र की भाषा नहीं जानता वह मोक्ष शास्त्रों का स्वाध्याय नहीं कर सकता। अतः स्वाध्याय की सिद्धि के लिए भाषा का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। जो व्यक्ति वेदों का और वेदानुकूल ऋषिकृत ग्रन्थों को पढ़ना चाहता है उसे संस्कृत भाषा का अध्ययन अवश्य ही करना चाहिए।

दूसरा साधन ऋषिकृत ग्रन्थों को पढ़ना, इनके पढ़े बिना वेद को समझना कठिन है अतः ऋषिकृत ग्रन्थों को पढ़ना चाहिए।

<u>स्वाध्याय की महिमा</u>:– स्वाध्यायान्मा प्रमदः। अर्थात् स्वाध्याय में कभी प्रमाद नहीं करना चाहिए। तथा **संन्यसेद् सर्वकर्माणि वेदमेकं न संन्यसेद्।।**

अर्थात् स्वाध्याय से भिन्न अन्य सभी कर्म भले छूट जायें परन्तु वेद का स्वाध्याय नहीं छोड़ना चाहिए क्योंकि शास्त्रों में इसको परमतप कहा है।

<u>स्वाध्याय से लाभ</u>:– स्वाध्याय आत्मा, मन और बुद्धि से जुड़ा आध्यात्मिक कर्म है जैसे भोजन से क्षुधानिवृत्ति और स्वास्थ्य लाभ होता है वैसे स्वाध्याय आत्मा का भोजन है जो कि कर्त्ता को लाभ पहुंचाता है। स्वाध्याय व्यावहारिक तथा पारमार्थिक सुख का साधन है जो कि मूर्ख को ज्ञानी, मूढ़ को तार्किक और भोगी को योगी बना देता है।

वेद कहता है – **पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभि: संभृतं रसम्।**
तस्मै सरस्वती दुहे क्षीरं सर्पि: मधुकरम्।। ऋ 9/67/32

वेद के इसी भाव को लेकर महर्षि मनु जी कहते हैं:–

य: स्वाध्यायमधीतेऽब्द विधिना: नियत: शुचि:।
तस्य नित्यं क्षरत्येष पयो दधि घृतं मधु।। 2/82।।

जो मनुष्य जितेन्द्रिय तथा पवित्र होकर प्रतिदिन विधिपूर्वक वेदाध्ययन करता है वह दूध, दही, घी तथा मधु को प्राप्त करता है। अभिप्राय यह है कि स्वाध्यायशील व्यक्ति धर्मार्थकाममोक्ष को प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है। योगदर्शनकार पतंजलि जी महाराज ने स्वाध्याय का फल बताते हुए कहा– **स्वाध्यायात् इष्टदेवतासम्प्रयोग:।** अर्थात् स्वाध्याय से इष्ट देवता = परमपिता परमात्मा के साथ सम्बंध हो जाता है।

वैदिक ग्रन्थों में स्वाध्याय के फल अनेक स्थलों में वर्णित हैं। लेख के कलेवर को ध्यान देते हुए लेखनी को यहां विराम दिया जाता है।

दर्शन योग महाविद्यालय
सुन्दरपुर, रोहतक, हरियाणा

www.thearyasamaj.org

वेद मन्त्रों से ही, वेद ईश्वरीय ज्ञान है, सिद्ध होता है

● खुशहाल चन्द्र आर्य

भारतीय परम्परागत दृष्टि से वेद नित्य है और प्रभु की अमर व पवित्र वाणी है, अर्थात् वे अपौरुषेय हैं। अतः वेदों में ईश्वर, जीव और प्रकृति का यथावत् वर्णन है। इस विषय को स्वयं वेद घोषणा करता है कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है। वे मन्त्र इसी भाँति है:–

अन्वेको वदति यद्ददाति तद् रूपा मिनन्तदप एक ईयते।
विश्वा एकस्य विनुदस्तितिक्षते यस्ताकृणोः प्रथमं सास्पुवथ्यः।। (ऋ.2/13/3)

हे मनुष्यो! जो अद्वितीय ईश्वर हमारे कल्याण के लिए सृष्टि के आदि में वेदों का उपदेश करता है तथा जगत् का सर्जन, पालन और प्रलय करता है और जो अन्तर्यायी तथा अपार शक्तिवाला होने से सब निन्दाओं को सहता है, उसी सर्वोत्तम प्रशंसा योग्य ईश्वर की आप लोग उपासना करें।

दूसरा मन्त्रः–

यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य यो ब्राह्मणो नाधमानस्य कीरेः।
युक्त ग्राव्णो योऽविता सुशिप्रः सुतसोमस्य स जनास इन्द्रः।। (ऋ. 2/12/16)

हे मनुष्यों! तुम संसार की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय के कर्त्ता तथा समस्त विद्यामय वेद का ज्ञान कराने वाले उस परमेश्वर की ही उपासना करो।

तीसरा मन्त्रः–

वि वातजूतो अतसेषु तिष्ठते वृथा जुहूभिः सृण्या तुविष्वणिः।
तृषु यदग्ने वनिनो वृषायसे कृष्णंत एम रूशदूर्मे अजर।। (ऋ.2/12/6)

सब मनुष्यो के प्रति ईश्वर कहता है कि मैंने जो वेदों में बताया है, वही तुम्हारा अपना स्वरूप है, ऐसा तुम्हें जानना चाहिए।

वेद की उपर्युक्त ऋचाओं से विदित होता है कि परमेश्वर संसार की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय का कर्त्ता है और हमारे कल्याण के लिए सृष्टि के आदि में वेदों का उपदेश करता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि कुरान ओर बाइबल को भी ईश्वरीय ज्ञान माना जाता है, फिर क्या कारण है कि वेद को ही ईश्वरीय ज्ञान माना जाये और बाइबल और कुरान आदि धर्मग्रन्थों को नहीं? अतः यह उपयुक्त प्रतीत होता है कि कुरान, बाइबल आदि धर्म ग्रन्थों को भी कसौटियों पर कसते हुए कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जावें जिन से सुधी पाठकों को यह निश्चय हो सके कि क्या कुरान, बाइबल आदि को भी ईश्वरीय–ग्रन्थ माना जा सकता है या नहीं?

वेदादि समस्त आर्ष ग्रन्थों में परमेश्वर को न्यायकारी माना है। सारे कर्मों का फल ईश्वर पूर्ण न्यायपूर्वक, निष्पक्ष भाव से प्रदान करता है। इसलिए ईश्वर की संज्ञा "न्यायकारी" है। ईश्वर सम्पूर्ण संसार का स्वामी है। पूर्वकृत कर्मों के अनुसार संसार के समस्त प्राणियों के कर्मफल की यथावत् व्यवस्था करना ही परमेश्वर का न्याय है। वेद में कहा है:–

विद्यामेषि रजस्पृथ्वध मिमानो अक्तुभिः। पश्यन् जन्मानि सूर्य।। (ऋ. 1/50/7)

अर्थः– जिसके द्वारा सूर्य आदि जगत् रचा जाता है और सब प्राणियों के पाप–पुण्य रूप कर्मों को देख कर उनके यथायोग्य फल प्रदान किये जाते हैं। वही (ईश्वर) सबका सच्चा न्यायाधीश राजा है, ऐसा सब मनुष्यों को जानना चाहिए।

अब कुछ उदाहरण कुरान के जिनसे ईश्वर न्यायकारी नहीं स्वेच्छाचारी जान पड़ता है।

(1) अल्लाह जिसको चाहेगा क्षमा करेगा, जिसको चाहे दण्ड देगा, क्योंकि वह सब से बलवान है। (मं. 1/सि. 3/सू. 2/आ. 284)

(2) क्षमा करने वाला पापों का और स्वीकार करने वाला तौबा का। (मं. 6/सि. 24/सू. 40/आ. 2,3)

(3) अल्लाह क्षमा करता है पाप सारे, निश्चय वह है क्षमा करने वाला दयालु। (मं. 6/सि. 24/सू. 3/ आ. 53,60,68)

इन आयतों से सुधी पाठक ही समझ सकते है कि अल्लाह न्यायकारी है या स्वेच्छाचारी। अब बाइबल के कतिपय उदाहरणः–

1–पापियों के पाप क्षमा करना और उनके रोगों को दूर करना और कहना कि मैं धर्मियों के नहीं, परन्तु पापियों को पश्चाताप के लिए बुलाने आया हूँ। (इ. म. प. 8/आ. 2,23।। का भाव मात्र)

2–ईश्वर ने उसके कुकर्मों का स्मरण किया। जैसा तुम्हें उसने दिया है तैसा उसको भर देओ। और उसके कर्मों के अनुसार, दूना उसे देओ।। (यो. प्र. प. 7/आ. 4,5)

इन आयतों से ईश्वर (रवक) न्यायकारी नहीं जान पड़ता।

वेदों के अनुसार परमेश्वर कृतज्ञता पाने के लिए अपराधी को क्षमा नहीं करता, न बदले की भावना से किसी को दण्डित करता है। उसकी न्याय व्यवस्था इतनी पूर्ण है कि उसमें यथायोग्य व्यवहार होने से न निर्दोष दण्डित हो सकता है और न अपराधी छूट सकता है।

उदाहरण के लिए कुछ और वेद–मन्त्रः–

इदमापः प्र वहत यत्किञ्च दुरितं मयि।
यद्वाहम भिदुद्रोह यद्वा शेप उतानृतम्।। (ऋ. 1/23/22)

अर्थः–मनुष्यों के द्वारा जैसा पाप और पुण्य किया जाता है, वैसा ही ईश्वर की व्यवस्था से उन्हें फल प्राप्त होता है, यह निश्चिय है।

न ता मिनन्ति मायिनो न धीरा व्रता देवानां प्रथमा घ्रुवाणि।
न रोदसी अद्रुहा वेद्याभिनं पर्वता निनमे तस्थिवांसः।। (ऋ.3/56/1)

अर्थः– किसी की शक्ति नहीं है कि जो ईश्वर के बनाये नियमों का उल्लंघन कर सके। जिसके भ्रान्तिरहित और शान्तियुक्त कर्म हैं, उसी दया के सागर ईश्वर की सब उपासना करें।

उपर्युक्त प्रमाणों से विदित होता है कि वेद वर्णित परमेश्वर पूर्ण न्यायकारी है। वह पापों को क्षमा नहीं करता। वह जीवों के शुभाशुभ कर्मों का फल यथायथ देता है बाइबल और कुरान में परमेश्वर पापों को क्षमा करने वाला है, अतः इन्हें ईश्वरीय वाणी नहीं कहा जा सकता।

यह लेख बहुत उपयोगी समझकर मैंने "वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है" जो स्वामी सेवानन्द सरस्वती वैदिक धर्म प्रचार–प्रसार न्यास के द्वारा जयपुर से प्रकाशित होती है, उसके सहयोग से यह लेख लिखा है। कृपया पाठक गण इसका पूरा लाभ उठावें।

गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स
180 महात्मा गान्धी रोड,
(दो तल्ला) कोलकता–700007
फोनः– (033) 22183825
मो. 9830135794

आदि कवि का काव्य

● **नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'**

परमपिता परमेश्वर जिनका मुख्य एवं निज नाम ओ३म् है उन्हें उनके असंख्य गुणों के कारण अनेकों नामों से जाना जाता है। इसी क्रम में यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के आठवें मंत्र में **कविर्मनीषी परिभूः** कहकर ईश्वर को आदि कवि सर्वत्र सभी जीवों की मनोवृत्तियों को जानने वाला तथा दुष्ट पापियों का तिरस्कार करने वाला बतलाया गया है। जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि यह अक्सर कहा जाता है। इस मंत्र से ईश्वर के कवि रूप में सर्वव्यापी सर्वज्ञ सर्वअन्तर्यामी गुणों का पता चलता है। सर्वत्र सभी जीवों की मनोवृत्तियाँ जानने वाला आदि कवि ईश्वर। इसके लिए हर काल में हर स्थान पर होना अर्थात् अनादि अनन्त और सर्वव्यापी गुणों का होना आवश्यक है। साथ ही सर्वअन्तर्यामी होकर सभी जीवों के मनों में रहकर उनके मनोभावों को जानना और सब कुछ जानने के कारण उस ईश्वर का सर्वज्ञ होना सिद्ध होता है। अपौरुषेय ग्रन्थ ईश्वरीय वाणी वेद में वर्णन से परमपिता परमेश्वर का आदि कवि होना सिद्ध होता है।

परन्तु किसी भी रचनाकार को उसकी रचना के माध्यम से भी जाना जाता है। जैसे चित्रकार की पहचान उसके बनाए चित्र से होती है। शिल्पकार अपने शिल्प से जाना जाता है। ठीक इसी प्रकार जब हम परमपिता परमेश्वर को आदि कवि कहते हैं तो उनकी पहचान उनके काव्य से होगी। अब प्रश्न उठता है कि ईश्वर का काव्य क्या है जिससे हम आदि कवि को जान सकें। जैसे रचनाकार की रचना उसकी कृति है और वह अपनी रचना के माध्यम से जाना गया ठीक उसी प्रकार आदि कवि ईश्वर को जानने के लिए उनके काव्य को देखें और उस कवि के संदेश को समझकर जीवन में ढालें और जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करके सार्थक करें।

आदि कवि ईश्वर की रचना क्या है? सृष्टिकर्ता के रूप में इस सृष्टि का निर्माण परमपिता परमेश्वर ने ही तो किया है और यह समस्त सृष्टि उनकी रचना या काव्य ही तो है। इतना ही नहीं उस परमपिता परमेश्वर ने सृष्टि के निर्माण के समय ही सृष्टि में रहने वाले समस्त प्राणियों के लिए एक नियमावली संहिता के रूप में वेद ज्ञान चार ऋषियों के माध्यम से प्रदान किया। यह अपौरुषेय ग्रंथ ईश्वरीय वाणी वेद ज्ञान उसी आदि कवि का काव्य है। अथर्ववेद में **देवस्य पश्य काव्यं न ममार ना जीर्यति** कहकर आदि कवि परमात्मा के काव्य को देखने का संदेश दिया गया जो ना कभी मरता है और ना ही जीर्ण शीर्ण होता है। यहाँ प्रश्न उठता है कि हम ईश्वर रचित उसके काव्य को कैसे देखें। उस आदि कवि के काव्य को देखने का अभिप्राय क्या है। अथर्ववेद के इसी मंत्र ईश्वर के इस काव्य को **अन्ति सन्ति** अर्थात् समीप से समीप या निकट से भी निकट बताया गया। इतनी निकट होने के कारण जैसे आंखों में लगा सुरमा आँखों से दिखाई नहीं देता ईश्वर के काव्य के संदर्भ में भी हमारी यही स्थिति हो जाती है। ईश्वर के काव्य को देखने के लिए हमें अपनी और अपने ईश्वर की स्थिति को बोध होना आवश्यक है। **ईश्वर सर्वभूतानां हृदयेशे तिष्ठति** अर्थात् वह ईश्वर तो अति सूक्ष्म रूप में हम सभी जीवात्माओं के अन्दर विद्यमान है। इससे स्पष्ट हुआ कि उस ईश्वर और उसके काव्य को देखने समझने के लिए

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

www.thearyasamaj.org

तैंतीस कोटि के देवताओं का वैज्ञानिक विभाग

● ओम प्रकाश आर्य

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी एम.ए. को आर्य समाज में बड़े आदर के साथ याद किया जाता है। वेद विषयक उनकी वैज्ञानिक व्याख्याएँ उच्चकोटि की हैं। वैदिक शब्दों की उन्होंने गूढ़ व्याख्याएँ की हैं। उन्होंने एतद्विषयक तैंतीस कोटि के देवताओं के छह वैज्ञानिक विभाग किये हैं– 1. समय 2. स्थान 3. शक्ति 4. आत्मा 5. मन के इच्छित कार्य 6. जीवन–सम्बन्धी अनिच्छित कार्य। इन छह विभागों के अन्तर्गत तैंतीस कोटि के देवता आ जाते हैं। यथा– 1 समय–12 आदित्य (मास) 2. स्थान 8 वसु 3. शक्ति–10 रुद्र 4. आत्मा–11वाँ रुद्र 5. मन के इच्छित कार्य–प्रजापति (यज्ञ) 6. जीवन सम्बन्धी अनिच्छित कार्य–विद्युत् (इन्द्र)। इन समस्त पदार्थों को ईश्वर, जीव, प्रकृति या 33 कोटि के देवता या छह वैज्ञानिक विभाग नाम दिया जा सकता है। आइए इनके वैज्ञानिक विभाग पर क्रमशः विचार करें–

1. समय–12 आदित्य (मास)–यदि इस सृष्टिरचना पर विचार करें तो जड़–चेतन, ग्रह, उपग्रह, नक्षत्र आदि सबकी एक निश्चित आयु है। सब एक निश्चित समयसीमा में बँधे हुए हैं। सबके अन्तर्गत एक विज्ञान काम कर रहा है। हमारे सौरमण्डल का केन्द्रबिन्दु सूर्य है। इसके चारों ओर पृथिवी चक्कर लगाती है। उसे एक चक्कर लगाने में पूरे 12 महीने का समय लगता है। इन बारह महीनों को आदित्य कहा गया है। यह हुई अपने ग्रह की बात। इसी प्रकार अन्य ग्रह जो सूर्य की परिक्रमा करते हैं, उन्हें सूर्य का एक चक्कर लगाने में भिन्न–भिन्न समय लगते हैं। यथा–पृथिवी 365 दिन में, बुध 88 दिन में, शुक्र 224 दिन में, मंगल 687 दिन में, बृहस्पति 11.9 वर्ष में, शनि 29.5 वर्ष में, यूरेनस 84 वर्ष में, नेप्च्यून 164.8 वर्ष में सूर्य की एक परिक्रमा करते हैं। हमारी पृथिवी के सूर्य के चारों ओर एक परिभ्रमण काल को 12 भागों में बाँटने का मुख्य कारण यह है कि हमारी पृथिवी 24 घंटे में स्वयं की परिक्रमा कर लेती है। इसके चारों ओर चन्द्रमा चक्कर लगाता है। 15 दिन शुक्लपक्ष और 15 दिन कृष्णपक्ष मिलाकर 30 दिन होते हैं। इन 30 दिनों से 365 दिनों को भाग देने पर 12 माह का समय निकल आता है। इसी को आदित्य की संज्ञा दी गई है। ये 12 आदित्य तो पृथिवी ग्रह के हैं। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के भिन्न–भिन्न आदित्य होंगे। उन्हें भी समय के अन्तर्गत आदित्य कहा जाएगा। हमारे जीवन का सम्बन्ध इन्हीं 12 आदित्यों से है। हम सबके आयु की गणना ये ही करते हैं। हमारे जीवन से इनका सीधा सम्बन्ध है। इसी प्रकार अन्य ग्रहों का समय पृथक्–पृथक् होगा। ऐसे ही असंख्य लोक–लोकान्तर समय की सीमा में बँधकर इस सृष्टि में संचालित हो रहे हैं। इनका नियंत्रक परमात्मा है। इसी कारण समय को देवता कहा गया है।

2. स्थान– 8 वसु– आठ वसुओं में पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, चन्द्रमा, सूर्य और नक्षत्र हैं। इनमें पृथिवी, चन्द्रमा, सूर्य और नक्षत्र लोकरूप स्थान हैं। जल, अग्नि, वायु और आकाश प्राणियों को बसाने का काम करते हैं। इनके बिना जीवन संभव नहीं है। जल, वायु और अग्नि तो सबकी समझ में आते हैं किन्तु आकाश के बारे में कम जानते हैं। वैज्ञानिक शब्दों में इसे "ईथर" कहते हैं। सरल शब्दों में वायु से सूक्ष्म तत्त्व आकाश है। इसे खाली स्थान या अवकाश कह सकते हैं। यदि आकाश न रहे तो जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। हमारा आना, जाना, श्वास लेना, दौड़ना, काम करना, रहना बिना अवकाश के सम्भव नहीं है। क्या हम एक संकीर्ण कमरे में आजीवन रहना पसन्द करेंगे? क्या एक पक्षी बन्द पिंजड़े में रहना पसन्द करता है? प्रत्येक प्राणी को स्वतंत्र आवागमन चाहिए जो आकाश ही प्रदान करता है। इसलिए समस्त तत्त्वों को बसाने के लिए 8 वसु हैं। ये स्थान के अभिसंज्ञक हैं। इनके अभाव में जीवन असम्भव है। जीवन और स्थान का अटूट सम्बन्ध है। ये प्राकृतिक स्थान अति महत्त्वपूर्ण होने के कारण देवसंज्ञा से विभूषित किए गए हैं। ये सब उपादान कारण के अन्तर्गत आते हैं। इन्हें प्रकृति कहा गया है।

3. शक्ति–10 रुद्र– दस रुद्र हैं–प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनंजय। वैज्ञानिक शब्दों में इन्हें शक्ति कहा जा सकता है क्योंकि इनमें प्राणशक्ति, अपानशक्ति, व्यानशक्ति, समानशक्ति और उदानशक्ति को जीवन के साथ अनुभव करते हैं। शेष नाग आदि उपशक्तियाँ हैं। मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट, पतंग, वृक्ष, वनस्पति सबको प्राणशक्ति चाहिए। ये शक्तियाँ आत्मा को शरीर में ठहरने के लिए साधन या आश्रय का काम करती हैं। आत्मा इन्हीं शक्तियों के आधार पर शरीर रूपी रथ पर सवारी करता है। ये शक्तियाँ जड़ हैं। किन्तु जीवन को धारण करने में मुख्य भूमिका निभाती हैं। जिसके प्राण बलवान हैं उन्हें कोई रोग नहीं हो सकता। ये शक्तियाँ प्रत्येक प्राणी को शारीरिक और मानसिक बल प्रदान करती हैं। जीवन के आधार हैं। सदैव आत्मा के साथ लगे रहने वाले इन तत्त्वों के बिना जीवन को धारण करना सम्भव नहीं है। इन्हें सबल बनाकर दीर्घायु प्राप्त की जा सकती है। जीवनाधार होने के कारण इनको देव कहा गया है।

4. आत्मा–11वाँ रुद्र– आत्मा 11वाँ रुद्र है। इनकी संख्या असंख्य है। समस्त सृष्टि में चहल–पहल आत्माओं के कारण ही है। वृक्ष–वनस्पतियाँ भी इसी कारण फूलती–फलती हैं। आत्मा की सत्ता के कारण ही जीवन का नाम जीवन है अन्यथा सब कुछ जड़ है। जड़ का महत्व बिना आत्मा के कुछ भी नहीं है। उन समस्त आत्माओं का आत्मा परमात्मा है। सूक्ष्म जीव से लेकर विशालकाय हाथी जैसे प्राणी भी आत्मा का अस्तित्व प्रकट करते हैं। ये सब चेतनता दर्शाते हैं। बिना आत्मा के कोई भी प्राणी गति नहीं कर सकता। आत्मा के शरीर से निकलते ही शरीर जड़ हो जाता है फिर उसका कोई महत्त्व नहीं रह जाता। आत्माओं का वर्गीकरण करना आसान काम नहीं है फिर भी मोटे तौर पर हम इन्हें इस रूप में विभाजित कर सकते हैं–1. मनुष्य शरीरधारी आत्मा 2. पशुशरीर आत्मा 3. पक्षी शरीर आत्मा 4. कीट–पतंग शरीर आत्मा 5. अति सूक्ष्म शरीर आत्मा 6. वृक्ष–वनस्पति शरीर आत्मा। सृष्टि का सारा खेल ही आत्माओं का खेल है। परमपिता परमात्मा ने इन्हीं के लिए इस सृष्टि का निर्माण किया है। आत्माएँ सृष्टि का आधार हैं। यदि ये न हों तो सृष्टि का कोई मतलब ही नहीं है। यहाँ आकर सभी आत्माएँ स्वतंत्र रूप से अपना–अपना कार्य करके कर्मफल का उपभोग करती हैं। यह उनका कर्मक्षेत्र है। इस कर्मक्षेत्र में सब कर्म करने के लिए स्वतंत्र हैं। जैसा कर्म वैसा फल। आत्मा के निकलते ही सारी क्रियाएँ समाप्त। हम आत्मा सृष्टि का अंग हैं। परमात्मा इनकी ओर सर्वथा दृष्टि रखता है। कौन क्या कर रहा है सब उसे पता है।

5. मन के इच्छित कार्य– प्रजापति (यज्ञ)– यज्ञ की अवधारणा कर्म से है। कर्म से ही जीवन का व्यापार चलता है। मनुष्य अपने मन की इच्छाओं की पूर्ति के लिए कर्म करता है। अन्य प्राणियों का कर्म केवल भूख–प्यास मिटाने के लिए होता है। केवल मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जिसका सम्बन्ध कर्म और भोग दोनों से है। वह कर्म इसलिए करता है ताकि वह मनोवांछित फल प्राप्त कर सके। यज्ञ कर्म का विधान करता है। जीवात्माओं के लिए यह सृष्टि कर्मक्षेत्र है। इसे वैदिक भाषा में यज्ञ कह सकते हैं। यज्ञ एक व्यापक शब्द है। सत्य वाणी, सत्य क्रिया, सत्यपालन सब यज्ञ के रूप हैं। सिर्फ अग्निहोत्र करना ही यज्ञ नहीं है अपितु जीवनोन्नति हेतु किया गया प्रत्येक कर्म यज्ञ है। प्रत्येक श्रेष्ठ कर्म यज्ञ है। इसका फल अवश्य मिलता है। कहा गया है–जैसा कर्म वैसा फल। कोई भी कर्म निष्फल नहीं जाता। इसीलिए सदैव उत्तम कर्म करने पर बल दिया गया है। यज्ञ ही प्रजापति है। हम अपनी कामनाओं की पूर्ति कर्म से करते हैं। कर्म ही इच्छाओं को पूर्ण करता है। यज्ञ में "स्वाहा" का उच्चारण बड़े महत्त्व का है। आहुति स्वाहा के साथ ही जाती है। वैज्ञानिक शब्दों में "स्वाहा" आविष्कार का बोधक है। प्रत्येक आविष्कार 'स्वाहा' का परिणाम है। आविष्कार से मन के इच्छित कार्य होते ही हैं। इस प्रकार यज्ञ विज्ञान का रूप है। इसी कारण इसे प्रजापति कहा गया है। **अद्भ्यः स्वाहा!** अर्थात् जल से आविष्कार करना है। **अग्नये स्वाहा।** अर्थात् अग्नि से आविष्कार करना है। **पृथिव्यै स्वाहा।** अर्थात् पृथिवी से आविष्कार करना है। इस प्रकार यज्ञ विज्ञान का रूप है। देवता है। महान् उपकारक कर्म। समस्त उपयोगी तत्त्व देवता हैं। यह एक पारिभाषिक उपयुक्त शब्द है।

6. जीवन सम्बन्धी अनिच्छित कार्य–विद्युत् (इन्द्र)–वास्तव में विद्युत् हमारे जीवन की वह ऊर्जा है जिससे शरीर चलता है। मनुष्य ही नहीं अपितु समस्त जीव–जन्तु, वृक्ष–वनस्पतियों का जीवन इसी पर आश्रित है। शरीर का सारा कार्य–व्यापार ऊर्जा से ही चल रहा है। ऊर्जा जीवन का पर्याय है। ऊर्जा समाप्त जीवन समाप्त। हम इसे दो भागों में विभाजित कर सकते हैं–1. शारीरिक 2. मानसिक। दोनों प्रकार की शक्ति चाहिए, तभी जीवन चलेगा। जितना शारीरिक बल आवश्यक है उतना ही मानसिक बल भी आवश्यक है। मानसिक बल क्षीण होते ही जीवन सड़क पर आ जाता है। ऊर्जा का सही–सही उपयोग जीवन को आगे बढ़ाता है। बल को हम विद्युत् का पर्याय मान सकते हैं। यही विद्युत् वा इन्द्र गति का संचार करके प्राणिमात्र का जीवन चलाते हैं। कभी–कभी भौतिक उत्पात के रूप में इस ऊर्जा का विभ्रंश भी सामने आ जाता है। उसे हम नहीं चाहते, किन्तु अनिच्छित ऊर्जा भी जीवन को प्रभावित कर देती है। यथा–बिजली का गिरना, आंधी–तूफान व अन्य प्राकृतिक प्रकोप। न चाहते हुए भी उनका सामना करना पड़ता है।

इस प्रकार तैंतीस कोटि के देवताओं में समस्त सृष्टि का संग्रहण हो जाता है। इनका विश्लेषण व संक्षिप्तीकरण त्रैतवाद के रूप में हो जाता है। सबको व्यवस्थित करने में परम आत्मा अर्थात् परमात्मा की शक्ति काम करती है। इसलिए उसे इन देवों को देव महादेव कहा गया है। वही इनका व्यवस्थापक, नियंत्रक व संचालक है।

आर्य समाज रावतभाटा
वाया कोटा (राजस्थान) 323307

www.thearyasamaj.org

शाकाहार के समर्थन में ऋषि दयानन्द

● अभिमन्यु कुमार खुल्लर

धर्म के मामले में अपने मत का मण्डन और विरुद्ध मत का खण्डन शास्त्रार्थ कहलाता है और बाकायदा शास्त्रार्थ का विषय और नियम निश्चित कर पीठासीन अधिकारी की नियुक्ति होती है – ठीक उसी प्रकार जैसा कि आज न्यायालयों में पक्ष–विपक्ष के वकील होते हैं और न्यायाधीश पीठासीन अधिकारी होता है। लेकिन उदयपुर के महाराणा सज्जन सिंह जो पीठासीन अधिकारी थे और पक्ष के वकील भी, के सामने महाराज दयानंद ने भैंसों की वकालत की।

पं. लेखराम रचित महर्षि दयानंद के जीवन चरित के पृष्ठ 550 पर जो विवरण मिलता है, उसे अक्षरशः प्रस्तुत किया जाता है:–

"जब दशहरा आया तो स्वामीजी बग्घी पर बैठकर दशहरा देखने गये। नवदुर्गों के दिनों में बलिदान के लिये भैंसे बहुत मारे जाते थे। इस पर स्वामी जी ने दरबार से एक युक्तियुक्त शास्त्रार्थ किया। एक मुकद्दमे के रूप में कहा कि हमको भैंसों ने वकील किया है। आप राजा हैं और हम आपके सामने मुकद्दमा करते हैं। पुरानी प्रथा के नए नए रूप दिखाते हुए, अंत में स्वामीजी ने उन्हें समझा दिया कि इनके मारने से पाप के अतिरिक्त कुछ लाभ नहीं है। यह निरा अत्याचार है। तत्पश्चात् स्वामीजी ने उनको निषेध किया। तब राणा ने स्वीकार करके कहा कि भैंसों की बलि हम एकदम बंद नहीं कर सकते और न करना उचित है, लोग क्रुद्ध होंगे। तब स्वामीजी ने कहा अच्छा शनैः शनैः ही कम कर दो। तदनुसार वहीं सूची बनाई गई। राणा साहब ने प्रतिज्ञा कि वह धीरे धीरे कम करने का प्रयत्न करेंगे। भैंसों का यह मुकद्दमा महर्षि जीत गये। महाराणा प्रजा के लिये आदेश निकालकर अपनी प्रतिज्ञा की इतिश्री नहीं करना चाहते थे क्योंकि वह स्वयं मांसाहारी थे। महर्षि ने क्रमशः कम करने के उनके वचन को स्वीकार भी किया था। महाराणा अल्पायु में स्वर्ग सिधार जाने के कारण अपनी प्रतिज्ञा पूरी नहीं कर सके।

लेखरामकृत महर्षि दयानंद के जीवन चरित में मांसाहार के विरोध में व्यक्त विचारों का अवलोकन करना समीचीन होगा –

पृष्ठ 286– प्रश्न – प्रायः हिन्दू उदाहरणार्थ कायस्थ, क्षत्रिय आदि मद्य और शिकार (मांस) खाते पीते हैं, सो यह काम भी करना उचित है या नहीं?

उत्तर – मद्य और मांस का खाना पीना नहीं चाहिये और बुद्धि के अनुसार भी प्राणधारी का मांस खाना अत्याचार में सम्मिलित है। वेद तथा शास्त्र की दृष्टि से निषिद्ध है।

पृष्ठ 383 –1– महर्षि दयानंद गोमेध और अश्वमेध आदि यज्ञों का खण्डन करते थे कि ऐसा करना शास्त्र में कदापि विहित नहीं है।

2– अपने आपको उदाहरण के रूप में उपस्थित करते थे कि मैं कोई मांस खाने वाला नहीं हूँ, जिसका जी चाहे मुझसे युद्ध करे। स्वाद केवल मसालों का है, मांस का नहीं। मांस कोई बल नहीं देता।

3– जबसे मद्य मांस का प्रचार हुआ लोग सत्य धर्म से पतित हुए। तबसे ही देवभूमि में अनार्य लोग आकर राज्य करने लगे।

पृष्ठ 385 – मांस खाना आत्मा के लिये हानिप्रद है, सांसारिक मनुष्यों को इसकी प्रतीति नहीं होती। मांस खाने वाले को योग विद्या नहीं आती है और न कोई सिद्धि उसको प्राप्त होती है। अर्थात् मांस खाने वाला गुणग्राहकता तथा आस्तिकता से वंचित रहता है। वेदों का अभिप्राय यही है कि प्रत्येक व्यक्ति गुणग्राही, न्यायशील और आस्तिक हो। इसलिये वेद में मांस खाने का निषेध किया गया है।

महर्षि दयानंद के विचारों से, वेद और शास्त्रों के प्रमाणों के अतिरिक्त मैं विश्व के महान चिन्तकों के विचारों को प्रस्तुत करता हूँ।

महान गणितज्ञ पाइथागोरस का कथन है:–

1– जब तक मानव जानवरों का मांसाहार करते रहेंगे तब तक वे एक दूसरे का खून बहाते रहेंगे। निश्चय ही जो हत्या और पीड़ा का बीज बोता है वह आनंद और प्रेम की फसल नहीं काट सकता।

2– इस छोटे से ग्रह (पृथिवी) के लिये शाकाहार ही एक मात्र भोजन है।

3– नोबेल पुरस्कार से सम्मानित अंग्रेजी साहित्य के विद्वान जार्ज बर्नार्ड शॉ के अनुसार – "जबकि हम स्वयं ही कत्ल किये गए जानवरों के कब्रिस्तान हैं, तब तक कैसे इस पृथिवी पर आदर्शवादी परम्पराओं, स्थितियों की आशा कर सकते हैं?"

4– महान रूसी विचारक लियो टालस्टाय कहते हैं– "जब तक वधस्थल (कत्लगाह) है, तब तक युद्धस्थल भी रहेंगे।

क्या आपको इन उदाहरणों में महर्षि के विचारों की संपुष्टि नहीं मिलती? मैं कतिपय उदाहरण और दे सकता हूँ। परंतु लेख का कलेवर तो मुझे सीमित रखना ही होगा।

विश्वविख्यात् शाक्य मुनि गौतम बुद्ध यज्ञों में पशु बलि के कारण ही पीड़ित हुए थे और उन्होंने बौद्ध धर्म की स्थापना की थी। 'वैदिकी हिंसा, हिंसा न भवति' कहने वालों को यहाँ तक कह दिया यदि वेद में हिंसा का समर्थन है तो मैं वेद को नहीं मानता और न ही वेद प्रतिपादित ईश्वर को। बौद्ध मत की स्थापना पशुबलि की प्रतिक्रिया स्वरूप थी। ज्ञातव्य है कि वेद का मूल रूप में उन्होंने विधिवत् अध्ययन ही नहीं किया था।

अब जरा दृष्टिपात कीजिये मांसाहार विरोधी और शाकाहार समर्थक विद्वानों, वैज्ञानिकों एवं मनीषियों की सूची पर, जिन्होंने मानव इतिहास में अपना नाम अमर कर दिया है।

1– गौतम बुद्ध के साथ 2– भगवान महावीर और समस्त जैन समाज शाकाहारी है। बहुमुखी प्रतिभा के विश्वविश्रुत वैज्ञानिक, शिल्पकार और इंजीनियर 3– लियानार्ड डा विंची, 4– वैज्ञानिक सर आईज़क न्यूटन 5– बीसवीं सदी का अप्रतिम विज्ञान वेत्ता एलवर्ट आइंस्टीन 6– थॉमस एडीसन 7– जर्मनी का तानाशाह–एडौल्फ हिटलर 8– प्लेटो 9–महात्मा गाँधी 10– भूतपूर्व राष्ट्रपति वैज्ञानिक डॉ. अब्दुल कलाम 11– आधुनिक सिने जगत् के होलीवुड के विख्यात् कलाकार ब्रेड पिट 12– कैमरॉन डियाज 13– अमिताभ बच्चन 14– हेमा मालिनी 15– जूही चावला 16– शाहिद कपूर 17– शतरंज के विश्वविख्यात् भारतीय खिलाड़ी – विश्वनाथ आनंद– कहाँ तक गिनाऊँ?

भैंसों का वकील दयानंद लिखने का विचार मन में इसलिए आया कि बीफ ईटिंग (गौमांस भक्षण) का विषय पिछले कुछ दिनों में टी.वी. चैनलों और अखबारों में जमकर छाया रहा। राजनैतिक रोटियाँ सेंकी गई। मुस्लिम समाज का जबरदस्त दोहन करने वाली समाजवादी पार्टी की उत्तर प्रदेश सरकार ने आग जलाए रखने के लिये दादरी काण्ड के अखलाक के परिवार के लिये सहायता राशि को निरंतर बढ़ाने की घोषणा करते हुए पैंतालिस (45) लाख तक पहुँचा दिया। क्या कभी इतनी बड़ी राशि सामूहिक हत्याकाण्ड, नरसंहार से पीड़ित व्यक्तियों के परिवारों को मिली? क्या देश रक्षा के लिये प्राणोत्सर्ग करने वाले किसी मुसलमान सैनिक अफसर को मिली? न मिली है और न कभी मिलेगी भी। क्योंकि उससे तनाव उत्पन्न नहीं होता। राजनीति की रोटियाँ सेंकने को नहीं मिलतीं।

भाजपा और शिवसेना के गठजोड़ वाली सरकार के शिवसेना धड़े ने गौमांस भक्षण (बीफ) का परोक्ष–अपरोक्ष समर्थन कर देशव्यापी हलचल पैदा कर दी। गौमांस भक्षण के समर्थक इस हद तक पहुँच गये कि संवैधानिक व्यवस्था, व्यक्ति की स्वतंत्रता तक के उल्लंघन का तर्क दे डाला। ऋषि–मुनियों द्वारा गौमांस भक्षण का सतही बेबुनियाद आरोप तक लगा डाला। सबको लगा भोजन में व्यक्ति की स्वतंत्रता में हस्तक्षेप किया जा रहा है। व्यक्ति गौमूत्र पीए या शराब, शासन का हस्तक्षेप नहीं होना चाहिये। हम किधर जा रहे हैं? अंधकार से प्रकाश की ओर या प्रकाश से अंधकार की ओर। हम प्रार्थना करते हैं – असतो मा सद्गमय – असत्य से सत्य की ओर, तमसो मा ज्योतिर्गमय – अंधकार से प्रकाश की ओर और चल रहे हैं – सत्य से असत्य की ओर और प्रकाश से अंधकार की ओर। ईश्वर भी हमारा भला नहीं कर पाएगा।

इति

सेवानिवृत्त वरिष्ठ लेखाधिकारी (केन्द्र)
22–नगरनिगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज
लश्कर, ग्वालियर (म.प्र.) पिन 474001
फोन नं. 0751–2425931

www.thearyasamaj.org

☞ पृष्ठ 06 का शेष

आदि कवि का...

हमें कहीं बाहर भटकने की आवश्यकता नहीं है। वैसे भी हमारी इन्द्रियाँ बाह्यमुखी हैं अर्थात् हमारी आँखें बाहर की दुनियाँ को देखती हैं, कान बाहर की आवाजें सुनते हैं परन्तु उस ईश्वर और उसके काव्य को देखने के लिए तो हमें अन्तर्चक्षु खोलकर अन्दर की यात्रा शुरू करनी पड़ेगी। तभी हम जान पायेंगे कि मैं और मेरा ईश्वर दोनों एक साथ मेरे ही अन्दर विराजमान हैं। बस आवश्यकता है तो अपने ही अन्दर झांकने की, अन्तः यात्रा प्रारम्भ करने की।

अथर्ववेद के इसी मंत्र में **न ममार न जीर्यति** कहकर यह भी कहा है कि यह काव्य न कभी मरता है और न ही जीर्ण–शीर्ण होता है। इससे ईश्वरीय संदेश वेद की हर स्थिति हर काल में प्रासंगिकता सिद्ध होती है। क्रान्तदर्शी देव दयानन्द ने भी वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। कहकर आदि कवि के इस महान काव्य की प्रासंगिकता को स्थापित किया है। वेदों को पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सभी आर्यों का परम धर्म बताकर आदि कवि के काव्य को देखने का निर्देश दिया है। सृष्टिकर्ता ईश्वर की सृष्टि को यदि हम उस कवि के काव्य के रूप में देखें तो सूक्ष्म रूप से विभक्त विभिन्न परमाणुओं का संयोग मिलना सृष्टि का निर्माण और इनका विभाजन वियोग अलग हो जाना ही सृष्टि का विनाश या संहार है। यहाँ स्पष्ट सिद्धांत है कि न तो शून्य से उत्पत्ति और न ही शून्य में कुछ विलीन होता है। सृष्टि का निर्माण सृष्टिकर्ता ईश्वर द्वारा किया गया और किसी भी कार्य के लिए कर्ता का होना अत्यंत आवश्यक है। जैसे छापेखाने के अक्षर बिना संयोजन के स्वयं उठकर किसी पुस्तक को नहीं छाप सकते ठीक उसी प्रकार बिना सृष्टिकर्ता ईश्वर द्वारा किया गया और किसी भी कार्य के लिए कर्ता का होना अत्यंत आवश्यक है। जैसे छापेखाने के अक्षर बिना संयोजन के स्वयं उठकर किसी पुस्तक को नहीं छाप सकते ठीक उसी प्रकार बिना सृष्टिकर्ता ईश्वर के सृष्टि का निर्माण असंभव है। अतः यह समस्त सृष्टि प्रकृति इसके रंग इसमें रहने वाले समस्त जीव ईश्वर की कृति या फिर उस आदि कवि का काव्य ही तो है और ईश्वर प्रदत्त ज्ञान वेद जो सृष्टि में रहने वाले जीवों के लिए नियमावली या संहिता के रूप में है वह भी उसी आदि कवि का काव्य है जो न कभी मरता है और न ही जीर्णशीर्ण होता है अर्थात् सदैव प्रासंगिक रहता है। इससे स्पष्ट है कि हम उस आदि कवि के काव्य को देखें उसे समझें जीवन में धारण करें **संश्रुतेन गमेमहि** उसी के अनुसार चलें और **मा श्रुतेन विराधिषी** अर्थात् ईश्वर प्रदत्त सृष्टि के साधनों के संदर्भ में उसका **तेन त्यक्तेन भुंजीथा** अर्थात् त्यागपूर्वक भोग करें।

602 जी.एच. 53 सैक्टर 20
पंचकूला, हरियाणा
मो. 09467608686, 09878748899

☞ पृष्ठ 02 का शेष

मानव जीवन गाथा...

है? यदि सितार को ही बनाते–सँवारते रहो, इसकी कीलियाँ ही मरोड़ते रहो तो फिर गीत गाया कैसे जायेगा?

लाहौर में एक बार आर्यसमाज का उत्सव हो रहा था। एक सज्जन आये; बोले, "मैं बहुत अच्छी तरह सितार बजाकर गाता हूँ, मुझे एक गीत सुनाने का समय दिया जाये।" प्रोग्राम में कोई समय निकलता नहीं था, परन्तु कई दूसरे व्यक्तियों ने भी समय देने के लिए कहा तो मन्त्री जी ने कहा, "अच्छा पन्द्रह मिनट आपको दिये जाते हैं। पन्द्रह मिनट में अपना गाना समाप्त कीजिये।" गानेवाले सज्जन अपने सितार को लेकर स्टेज पर जा पहुँचे और अपने सितार के तारों को हिला–हिलाकर कीलियाँ मरोड़ने लगे। थोड़ी–थोड़ी देर के पश्चात् 'टंग–टंग' की ध्वनि होती और कीली मरोड़ी जाती रही। इस प्रकार पाँच मिनट व्यतीत हो गये। मन्त्री जी ने कहा–"आप गायेंगे भी या इसी प्रकार कीलियाँ मरोड़ते रहेंगे?" वे बोले, "श्रीमन्! अभी गाता हूँ, सितार के तार ठीक कर लूँ।" और फिर कीलियाँ मरोड़ने लगे। दस मिनट व्यतीत हो गए, बारह, चौदह मिनट बीत गये। उनका कीलियाँ मरोड़ना समाप्त नहीं हुआ। मन्त्री जी ने कहा, "श्रीमन्! केवल एक मिनट शेष है, अब भी कुछ गाना हो तो गा लो।" परन्तु वह अन्तिम मिनट में भी कीलियाँ मरोड़ते रहे। मन्त्री ने खेद के साथ कहा, "आइये श्रीमन्! मंच से नीचे उतर आइये, आपका समय हो गया।"

ओ जीवन की सितार बजानेवालो! सोचो, सोचो, सोचो कि कब तक तुम इस सितार की कीलियाँ ही मरोड़ते रहोगे? शरीर को बनाते और सँवारते रहोगे? अरे, यह सितार गाने के लिए मिली है, केवल कीलियाँ मरोड़ने के लिए नहीं। शरीर की रक्षा करो अवश्य, इसे खिलाओ–पिलाओ, इसे स्वस्थ बनाये रखो, परन्तु इस आत्मा को भी तो कुछ खिलाओ, जो वास्तविक गानेवाला है। इसके बिना यह सितार व्यर्थ है। इसके बिना आँख देखती नहीं, हाथ हिलता नहीं, जिह्वा चलती नहीं, नाक सूँघती नहीं। कुछ भी नहीं होता।

यह देखिये, मेरे पास ऐनक है न! दूर देखने की ऐनक है यह। और यह देखिये मैंने इसे मेज पर रख दिया। अब क्या इसे कुछ दिखाई देता है? कुछ भी नहीं। मैं इसे आँखों के आगे लगाता हूँ तो फिर दिखाई देता है। अब इसका क्या अर्थ हुआ? यह कि ऐनक नहीं देखती, आँखें देखती हैं। परन्तु वास्तव में आँखें भी नहीं देखतीं, आँखों के पीछे रूप तन्मात्रा का एक सूक्ष्म गोलक है, वह देखता है। यह गोलक भी नहीं देखता, इसके पीछे मन है वह देखता है। और वास्तव में मन भी नहीं देखता, इसके पीछे आत्मा है वह देखता है। आत्मा चली जाये तो दस सहस्र पाँच सौ पैंतीस ऐनकें लगा लो, कुछ भी दिखाई नहीं देगा।

एक थे वकील महोदय। उनके पास एक व्यक्ति आया अपना मुकद्दमा लेकर। कुछ पत्र वकील साहब के समक्ष रख दिये। वकील महोदय ने अच्छा शुल्क निश्चय किया। उसे लेकर अपनी जेब में रखा और अपने मुन्शी को आवाज दी, "अरे भाई! अन्दर से मेरी पढ़नेवाली ऐनक तो लाओ!" मुन्शी ऐनक लाया। वकील साहब उसे लगाकर पढ़ने लगे। पढ़कर कहने लगे, "साधारण बात है, अमुक–अमुक बात करने से तुम मुकद्दमा जीत जाओगे।" व्यक्ति था निडर ग्रामीण। आश्चर्य के साथ उसने सोचा, 'व्यर्थ इस वकील के पास आया और इसे इतने रुपये दिये। यदि पहले पता होता है कि पढ़नेवाली ऐनक भी होती है, तो मैं स्वयं ही सब–कुछ पढ़ लेता।' मुकद्दमे की बात छोड़कर उसने पूछा, "वकील साहब! क्या यह पढ़नेवाली ऐनक है?" वकील साहब ने इसका अर्थ नहीं समझा; बोले, "हाँ भाई, यह पढ़नेवाली ऐनक है।" ग्रामीण ने पूछा, "कहाँ से मिलती है?" वकील बोले, "अनेक स्थानों से मिलती है। मैंने यह कनॉट प्लेस से ली थी।"

ग्रामीण ने कनॉट प्लेस की दुकान का पता पूछा। दुकान पर पहुँचकर कहा, "क्यों भाई! आपके पास पढ़नेवाली ऐनक है?"

दुकानदार ने कहा, "हाँ, बैठो, अभी मिल जायेगी।" कुर्सी पर बिठाकर दुकानदार ने उसके चेहरे पर ऐनक का फ्रेम लगा दिया। अंग्रेज़ी की एक पुस्तक उसके हाथ में देकर कहा, "पढ़ो!" उस व्यक्ति ने ध्यान से देखते हुए कहा, "अभी तो नहीं पढ़ा जाता।" दुकानदार ने दूसरा शीशा लगाया। फिर उसने ध्यान से रखते हुए कहा, "पढ़ा नहीं जाता।" तब कितने ही शीशे उसने बदले, प्रति बार उसने कहा, "पढ़ा नहीं जाता।" दुकानदार ने समझा यह अंग्रेज़ी नहीं जानता; उसे हिन्दी की पुस्तक दी। वह भी उससे पढ़ी न गई। अन्त में थककर उसने पूछा, "तुम कोई भाषा पढ़ना भी जानते हो या नहीं?" उसने उत्तर दिया, "अरे, यदि पढ़ना ही जानता तो पढ़नेवाली ऐनक लेने के लिए क्यों आता?"

सुनो, सुनो! ऐनक नहीं पढ़ती। पढ़नेवाला कोई और है।

कश्मीर में कुकरनाग का एक सुन्दर स्थान है। नाग कहते हैं झरने को। कुकर कहते हैं कुत्ते को। कुत्ते की भाँति भौंकता हुआ, ध्वनि करता हुआ पानी कितने ही स्थानों से वहाँ बहता है। मैं वहाँ ठहरा हुआ था। एक दिन झरने से ऊपर पहाड़ पर चला गया। काफी आगे जाकर देखा कि एक सुन्दर मकान बना है। उसके दालान में एक सुन्दर कश्मीरी युवक बैठा है। मैंने उसके पास जाकर पूछा, "क्यों भाई! यह सामनेवाली पगडण्डी कहाँ को जाती है?" उसने मेरी ओर देखा; वहीं चुपचाप बैठा रहा। मैंने समझा शायद उसने मेरी आवाज को सुना नहीं और मेरी बात को समझा नहीं। अतः तनिक ऊँची आवाज में फिर पूछा, "यह मार्ग कहाँ जाता है?" वह अब भी नहीं बोला। हाँ, मकान के अन्दर से एक बूढ़े व्यक्ति ने आकर कहा, "क्या बात है?" मैंने कहा, "मैं इस युवक से पगडण्डी के बारे में पूछ रहा था, परन्तु यह मेरी बात का उत्तर नहीं देता।"

अन्दर से आनेवाले वृद्ध ने कहा, "कैसे देगा उत्तर? यह तो बहरा है, सुनता ही नहीं। गूँगा है, बोल भी नहीं सकता। अन्धा है, देख भी नहीं सकता।"

मैंने दुःख के साथ उस व्यक्ति की ओर देखा, जो अब भी चुपचाप बैठा था। वृद्ध ने कहा, "ठीक समय पर सो जाता है। ठीक समय पर जाग उठता है। पशुओं के साथ–साथ सामनेवाले मैदान में चला जाता है। शाम को वापस आता है। इतना ही कार्य कर सकता है। आँखें होने पर भी देखता नहीं, कान होने पर भी सुनता नहीं, जिह्वा होने पर भी बोल नहीं सकता।"

उस समय मुझे उपनिषद् की कथा याद आई। महर्षि याज्ञवल्क्य के पास महाराज जनक बैठे थे; बोले, "महर्षि! मेरे मन में एक शंका है–हम जो कुछ देखते हैं वह किसकी ज्योति से देखते हैं?" महर्षि ने कहा, "यह क्या बच्चोंवाली बात कहते हैं आप! प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि हम जो कुछ देखते हैं, वह सूर्य की ज्योति के कारण देखते हैं।" जनक बोले, "सूर्य अस्त हो जाता है, तब हम किस प्रकार से देखते हैं?" महर्षि बोले, "चन्द्रमा के प्रकाश से।" जनक ने कहा, "जब चन्द्रमा भी न हो, नक्षत्र भी न हों, अमावस्या के बादलों की भरी घोर अँधेरी रात हो, तब?" महर्षि ने कहा, "तब हम शब्दों की ज्योति से देखते हैं। विशाल वन है, चहुँ ओर अँधेरा है, पथिक मार्ग भूल गया है। वह आवाज देता है, 'मुझे मार्ग दिखाओ?' तब दूसरा व्यक्ति दूर खड़ा हुआ उस शब्द को सुनकर कहता है, 'इधर आओ, मैं मार्ग पर खड़ा हूँ।' और वह व्यक्ति शब्द के प्रकाश से मार्ग पर पहुँच जाता है।'

जनक ने पूछा, "महर्षि! और जब शब्द भी न हो, तब हम किस ज्योति से देखते हैं?" महर्षि बोले, "तब हम आत्मा की ज्योति से देखते हैं। आत्मा की ज्योति से ही सारे कार्य होते हैं।"

क्रमशः....

www.thearyasamaj.org

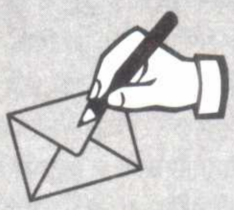

पत्र/कविता

देवी के स्थान पर पशु बलि अनुचित है

वेद एवं वैदिक शास्त्रों में कहीं भी पशुओं को मारने की आज्ञा नहीं है। यह कुप्रथा बिहार, झारखण्ड, बंगाल और असम में अधिक प्रचलित है। यह कुसंस्कार महाभारत काल के पश्चात् वाममार्गियों ने प्रचलित कर दिया। महाभारतकाल में यह (बलि) प्रथा नहीं था।

दुर्गा और काली के स्थान पर धर्मान्ध लोग मन्नत को पूर्ण करने के लिये पाठ की बलि देते हैं। यह धर्म के नाम पर अधर्म किया जा रहा है। यदि मन्नत से ही रोगादि ठीक हो जाता तो एक से एक डाक्टर के यहाँ कोई नहीं जाता। अतः दैवी शक्तियाँ रक्षक होती है, वे किसी पशु आदि की बलि नहीं चाहतीं वे इस कुप्रथा रूपी पापों की बलि चाहती हैं ताकि मनुष्य पशुबलि देकर एक और पाप का भागी बने। क्योंकि इस प्रथा का किसी भी सत्यशास्त्रों में का विधान नहीं है। देखिये 'शतपथ ब्राह्मण आदि ग्रन्थों में प्राणी वध अथवा हिंसा का पूर्ण निषेध है–'देवोपहारव्याजेन यज्ञ व्याजेन मेऽथवा।

ध्नन्ति जन्तून् गणघृणाघोरान्ते यान्ति दुर्गतिम्।। जो लोग देवता पर चढ़ाने के बहाने या यज्ञ के बहाने पशुओं को मारते हैं वे निर्दयी घोर दुर्गति को प्राप्त होते हैं।

पुनः व्यास वचन को देखें स्याद्वाद मंजरी में

प्राणीघातात् तु यो धर्ममीहत मूलमानसः।
स वाञ्छति सुधावृष्टिं कृष्णाहि मुखकोरात।।

अर्थात् जो मूढ़ प्राणियों को मार धर्म की इच्छा करता है वह काले सांप के मुँह से अमृत वर्षा चाहता है।

इसलिए इस अंधविश्वास का प्रचलन बन्द होना चाहिये।

इसके अलावा वेद ने भी पशुवध का पूर्ण निषेध किया है–

"पशुन पाहि गां मा हिंसी; अजां मा हिंसीः अविं मा हिंसीः, इमं माहिसीर्द्विपादं पशुम्,
मा हिंसीरेक शफं पशुम्, मा हिंस्यात् सर्वाभूतानि।। (यजुर्वेद)

अर्थात् पशुओं की रक्षा करो, गाय को मत मारो, बकरी को मत मारो, भेड़ को मत मारो, इस मनुष्य और द्विपद पक्षियों को मत मारो, एक खुर वाले घोड़े गधे को मत मारो और किसी भी प्राणी को मत मारो।"

प्रश्न–दवा के साथ दुआ की भी आवश्यकता होती है, इसलिये हम लोग मन्नत भी करते हैं।

उत्तर–यह दुआ माता–पिता, आचार्य से ही प्राप्त किया जाता है। परन्तु जो प्रतिमा के प्रति विश्वास करते हैं वे वहाँ जाकर प्रार्थना कर सकते हैं। अतः ईश्वरीय शक्तियाँ जीवन दायिनी माता–पिता के समान होती हैं। कोई भी माता अपने बच्चों को दुःख दूर करने के लिये किसी पशु को मारने की आज्ञा नहीं दे सकती, बल्कि बच्चों की प्रार्थना से उन्हें दुआ अवश्य प्राप्त होती है। यज्ञ से भी दैवी शक्तियाँ प्रसन्न होती हैं। अतः मनोकामना पूर्ति के लिये देवी के स्थान पर वैदिक मंत्रों से यज्ञ की करना चाहिये, यही सर्वोत्तम पूजा है।

यदि मन्नत से रोग ठीक हो जाता तो कोई शुगर, कोलोस्ट्रोल और खून की कमी के लिये औषधियों का सेवन न किया जाता।

श्री रामकृष्ण परमहंस के शिष्य स्वामी विवेकानन्द को (उनके गुरु ने) कभी नहीं कहा है कि देवी के स्थान पर पाठा की बलि दी जाय। और भला स्वामी विवेकानन्द "मानव सेवा से बढ़कर' और कुछ नहीं है" कहने वाले देवी को बलि देने की बात क्यों कह सकते हैं? यह कुप्रथा अंधविश्वासी तान्त्रिकों ने चलाई है। कितने ही लोग सन्तान प्राप्ति के लिये और नौकरी पाने की इच्छा से देवी–देवता के सामने मन्नत कर कर के थक गये किन्तु सफल नहीं हुए। और जो हुए वह अपने प्रयत्न और कर्म चेष्टा से हुए।

श्री हरिश्चन्द्र वर्मा 'वैदिक' (कीर्तिशेष)'
मु. पो. मुरारई, जिला वीरभमू
(प. बंगाल)–731219
मो. 81588078011

****

चण्ड है प्रतिज्ञा करि प्रज्ञाचक्षु, दण्डी ने

विरजा किनारे वसि व्रज जन दीक्षा दई
पूर्णानन्द गुरु सो समग्र ज्ञान पायौ हो।
नवनीत सुवन सरस्वती पुलिन जन्म
जन्म अन्ध विरजू सात वर्ष का सिधायो हो।।1।।
योग तप बल तें अधीत वेद वेद–अङ्ग
संग शिवानन्द ब्रह्मचारी मित्र पायौ हो,
संवत् अठारह सौ तेरह में कृष्णानन्द
सामवेदी दण्डी घाट ही को बनवायो हो।।2।।
वृन्दावन बीच रंगाचारी रंगमन्दिर में
ताको शिष्य लल्लूलाल विप्र अभियानी भौ,
नवनीत तासो गङ्गादत्त को विवाद छिड़्यो
अधिकरण षष्ठी तत्पुरुष प्रमानी भौ।।3।।
दक्षिणा दे सेठूहू ने संमति कराई झूँठि
विद्यावाद वाराणसी पुरी वेदवानी भौ,
आगरे कलक्टरी न्याय ना मिल्यौ तौ
प्रज्ञाचक्षुहू प्रतिज्ञा काज उद्यत अमानी भौ।।4।।
उन्नत ललाट बलबहुल विशाल मुण्ड
अक्षमालमाल भव्य चन्दन त्रिपुण्ड्री ने,
नवनीत प्यारे पर पच्छगिरि पच्छन पै
वज्राघात डिण्डिम नाम खलखण्डी ने।।5।।
सम्प्रदायवाद वेदविहित विवर्जित पै
सासन विदेशिन कौ नासन प्रचण्डी ने,
गोरे के अगारी ही उद्दण्ड भै उठाय दण्ड
चण्ड ह्वै प्रतिज्ञा करि प्रज्ञाचक्षु दण्डी ने।।6।।
आय मथुरा में शिष्यमण्डली बुलाय लीनी
आपने हिय के भाव कही समुझा गये,
कवि नवनीत मथुरा के सम्प्रदायवादी
सुन–सुन वचन संकुचि सरमा गये।।7।।
गङ्गादत्त हे जो रङ्गाचारी मतु खण्डन में
पुस्तक "रङ्गोक्तिपरिभाजन" बना गये,
दयानन्द ही ने चर्णपादुका पकरि लीनी
दयाकर दर्शन के दर्शन करा गये।।8।।

यह कविता हिन्दी के प्रसिद्ध कवि नवनीत चतुर्वेदी की लिखी हुई है। श्री नवनीत चतुर्वेदी ने ढाई वर्ष की आयु में अपनी एक आँख खो दी थी और उनके दादा ने उन्हें दण्डीजी की पाठशाला में अष्टाध्यायी पढ़ने के लिए दाखिल कराया था। बालक नवनीत तीन वर्ष तक दण्डीजी के आश्रम में उनकी मृत्युपर्यन्त अष्टाध्यायी का अध्ययन करते रहे। ब्रजभाषा के इस प्रसिद्ध कवि ने 18 पुस्तकें और 2500 के करीब छंद लिखे। प्रस्तुत कविता दण्डीजी के स्वभाव, उनके जीवन की कुछ घटनाओं को दर्शाती है, विशेष रूप में ब्रिटिश साम्राज्य और अवैदिक मतभेदों के विरुद्ध उनके विचारों को। पाठकों के लिए यह महत्त्वपूर्ण कविता प्रस्तुत है जिसे डॉ. रामप्रकाश जी द्वारा लिखित 'गुरु विरजानन्द दण्डी' नामक पुस्तक से साभार लिया गया है।

संपादक

www.thearyasamaj.org

डी.ए.वी. शक्ति नगर (सोनभद्र) उ.प्र. में श्रावणी पर्व एवं वेद प्रचार

डी.ए.वी. सीनियर सेकन्ड्री पब्लिक स्कूल, खड़िया परियोजना, एन.सी.एल. शक्ति नगर सोनभद्र, उ.प्र. में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रस्तावित कार्यक्रम के संदर्भ में श्रावणी पर्व एवं वेद प्रचार सप्ताह आयोजित हुआ जिसके अंतर्गत महायज्ञ एवं वृक्षारोपण का कार्यक्रम सम्पन्न किया गया।

विद्यालय के छात्र–छात्राओं को विद्यालयी यज्ञ परिसर में कक्षावार बैठाकर सामूहिक हवन प्रक्रिया सम्पन्न कराई गई। यज्ञ की महत्ता पर संस्कृत शिक्षक डॉ मिथिलेश झा जी, अपना वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए बताया कि यज्ञ से पर्यावरण प्रदूषण खत्म होता है, शारीरिक एवं मानसिक रोग दूर होते हैं तथा साथ ही साथ जल एवं वायु भी शुद्ध होती है जिससे अच्छी वर्षा होती है।

कार्यक्रम के अन्त में प्राचार्य श्री अशोक माथुर जी, ने यज्ञ की महत्ता एवं आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए बच्चों को कर्म के साथ–साथ धर्म से भी जुड़ने पर बल दिया। तथा साथ ही साथ यह भी बताया कि जिस प्रकार हवन सामग्री आहुति में पड़कर सूक्ष्म रूप में परिवर्तित होकर पर्यावरण को शक्ति देती है ठीक उसी प्रकार से हमें भी अपने सकारात्मक क्रिया–कलापों द्वारा वातावरण को सुन्दर एवं उपयुक्त क्रम देना चाहिए।

यज्ञ कार्यक्रम सम्पन्न कराने में संस्कृत शिक्षक डॉ मिथिलेश झा एवं हिन्दी शिक्षक अर्जुन मिश्रा के साथ–साथ कक्षा अध्यापको का सक्रिय योगदान रहा। वृक्षारोपण एवं महायज्ञ कार्यक्रम सभी के लिए प्रेरणास्पद रहा।

अशोक माथुर जी, ने कक्षा छठवीं तथा कक्षा सातवीं के छात्र–छात्राओं एवं कक्षा अध्यापको के साथ विद्यालय परिसर में वृक्षारोपण कार्यक्रम सम्पन्न कर अपने सम्बोधन में बताया कि वृक्ष धरती के प्रत्यक्ष देवता हैं। जीवन दायिनी शक्ति के प्रबल एवं सबल माध्यम हैं। इसलिए हमें नये पेड़ लगाना एवं लगे हुए पेड़ पौधो को सुरक्षित रखना अपना परम कर्त्तव्य समझना चाहिए।

आर्य समाज विज्ञाननगर में वैदिक व्याख्यान का आयोजन

परिवार के प्रत्येक सदस्य के साथ ऐसा प्रेमयुक्त व्यवहार करो जैसे गौमाता अपने तुरंत जन्मे बछड़े से करती है। द्वेष परिवार का सबसे बड़ा शत्रु है। हृदय को विशाल बनायें "मैं" की भावना को "हम" में बदलें। उक्त विचार आर्य समाज के वैदिक विद्वान् डॉ. विनय विद्यालंकार ने व्यक्त किये।

आर्य समाज विज्ञाननगर में आयोजित वैदिक व्याख्यान में उन्होंने कहा कि हमें वेद के ज्ञान, विज्ञान को समाज में जन–जन तक पहुंचाना है। ऋषियों की जो निधि सूत्र रूप में जो हमारे पास है उसे सभी को सौंपना है। परिवार, समाज एवं राष्ट्र के कल्याण के लिए काम करना है।

हाड़ौती के वैदिक विद्वान् आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने कहा कि मनुष्य जीवन को सार्थक बनाने की आवश्यकता है। दया, दान, इन्द्रिय संयम श्रेष्ठ मनुष्य बनने के साधन है।

इस अवसर पर श्रीमती उमा वशिष्ठ तथा दिनेश शर्मा ने ईश्वर भक्ति के भजन प्रस्तुत किये।

कार्यक्रम में आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा, आर्य समाज तिलक नगर के प्रधान ओमप्रकाश तापड़िया, गायत्री विहार के प्रधान अरविन्द पाण्डेय, मंत्री उमेश कुर्मी, शिक्षाविद् महिपाल सिंह, महिला आर्य समाज तिलक नगर की प्रधान यशोदा तापड़िया सहित बड़ी संख्या में आर्य समाज विज्ञाननगर एवं अन्य आर्यसमाजों के सदस्य एवं आर्यजन उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन जिला सभा के प्रचार एवं कार्यालय सचिव अरविन्द पाण्डेय ने किया। आभार आर्यसमाज विज्ञाननगर के मंत्री सुनील दुबे ने व्यक्त किया।

शहीद भगत सिंह के जन्मदिवस पर विशेष

मुक्ति

अरे मनुष्यों! करते हो गर्वोक्ति
कि तुम संतति हो मुक्त और वीर पितरों की,
पर यदि लेता सांस एक भी दास धरा पर,
तो क्या सचमुच तुम हो मुक्त और वीर?
यदि तुमको अहसास नहीं जब
बेड़ी पीड़ा देती एक भाई को
तो क्या सचमुच तुम नहीं अधम दास
जो काबिल नहीं मुक्त होने के?
क्या है वह सच्ची मुक्ति, जो तोड़े
जंजीरें बस अपनी ख़ातिर
और भुला दे संगदिल होकर
कि मानवता का कर्ज है हम पर?
नहीं, सच्ची मुक्ति तभी जब हम बांटें

सब जंजीरें, जो पहने हैं अपने भाई,
और भाव औ' कर्म से लगकर
हों औरों की मुक्ति से तत्पर!
दास हुए वे जो भय खाते हैं स्वर देने में
गिरे हुए और दुर्बल की खातिर
दास तो वे जो नहीं चुनेंगे
घृणा, डांट और गाली
और दुबक कर मुंह मोड़ेंगे
सच से, इस पर सोच जरूरी;
दास तो वे जो हिम्मत न करें
दो या तीन भी हों गर सच के हक में।

–जेम्स रस्सेल लॉवेल

शहीद भगत सिंह की जेल डायरी से साभार

www.thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11 \6066\2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103 \2015-17
Posted at N.D.P.S.O. ON 21/22-09-2016
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० 39\57

दक्षिण अफ्रीका का छात्र-प्रतिनिधि मण्डल पहुँचा डी.ए.वी. अशोक विहार फेज़-4 में

3 सितंबर 2016 को सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत सेंट एंड्रयूज कॉलेज, ग्रामहेम्स टाउन, दक्षिण अफ्रीका के छात्र प्रतिनिधि मंडल ने डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, अशोक विहार फेज़–4 का दौरा किया। विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती कुसुम भारद्वाज ने इन विदेशी अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया।

छह छात्रों वाले इस प्रतिनिधि मंडल ने विद्यालय में आयोजित यज्ञ में बड़ी उत्सुकता से भाग लिया। इन छात्रों को, प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी, द्वारा आरंभ किए गए 'स्वच्छ भारत अभियान' में विद्यालय के छात्रों के योगदान की जानकारी देने के लिए विशेष रूप से आमंत्रित किया गया।

इस अवसर पर विद्यालय की कक्षा–6 के छात्रों तथा शिक्षकों द्वारा क्षेत्र के निवासियों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने हेतु एक रैली का आयोजन भी किया गया। तत्पश्चात् आयोजित विशेष विशेष सभा में इन अतिथियों के सम्मान में रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जिसमें विद्यालय के छात्रों ने भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की एक झलक प्रस्तुत की।

इस कार्यक्रम के माध्यम से दोनों देशों के छात्रों को न केवल एक दूसरे की संस्कृति एवं जीवन–शैली से परिचित होने का अवसर प्राप्त हुआ अपितु वैश्विक रूप से उत्कृष्ट सांस्कृतिक, सामाजिक एवं शैक्षिक परिदृश्य के निर्माण की दिशा में अग्रसर होने की प्रेरणा मिली।

डी ए वी कॉलेज फिरोज़पुर कैंण्ट में हुआ यज्ञ का आयोजन

डी.ए.वी. कॉलेज फॉन वूमेन, फिरोज़पुर कैंट के प्रांगण में डॉ. सीमा अरोड़ा की अध्यक्षता में वेद प्रचार सप्ताह का शुभारम्भ परमपिता परमात्मा का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए हवन यज्ञ से किया गया। यज्ञ का संचालन आचार्य देवराज ने वैदिक मंत्रोच्चारण से किया। यज्ञ में कॉलेज के समस्त स्टाफ व छात्राओं ने भाग लिया। शांतिपाठ से यज्ञ सम्पन्न हुआ। शांतिपाठ उपरांत

प्राचार्या डॉ. सीमा अरोड़ा ने छात्राओं को हवन यज्ञ के महत्व व प्रभाव के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। छात्राओं को दयानन्द सरस्वती और महात्मा हंसराज जी ने जीवन से प्रेरणा लेने का अनुरोध किया। सप्ताह के अन्तर्गत वेदों से संबधित 'भजन गायन' 'क्विज' आदि प्रतियोगिताएँ करवाई गई। इसमें सभी छात्राओं ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया।

डी.ए.वी. गया (बिहार) में वैदिक सप्ताह और श्रावणी उपाकर्म का आयोजन हुआ

बिहार स्थित डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल कैंट एरिया, गया में वेद प्रचार सह श्रावणी उपाकर्म बिहार के प्रधान डॉ. यू. एस. प्रसाद द्वारा गया, किया गया।

इस अवसर पर डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल के शिक्षक डॉ. रविन्द्र दूबे के नेतृत्व में यज्ञशाला में बैठकर यज्ञाहुतियाँ डाली गई। वैदिक मंत्रोच्चार एवं 'स्वाहा' ध्वनि से वातावरण सुरम्य एवं सुगंधित बना रहा। यज्ञशाला परिसर में आंगतुकों छात्रों एवं शिक्षकों की उपस्थिति ने सभी को अपनी ओर आकृष्ट किया।

विद्यालय के सभागार में दीप प्रज्ज्वलन एवं स्वस्तिवाचन के साथ इस आयोजन का आरंभ हुआ। उद्घाटन सत्र के उद्बोधन में डॉ. यू.एस. प्रसाद ने वेदों को आदि वांङ्मय बताया। उन्होंने कहा–'वेद' शब्द 'विद्' धातु से बना है। 'विद् ज्ञाने' धातु पाठ करके 'घञ्' प्रत्यय से वेद शब्द बनता है, जिसका अर्थ ज्ञान होता है। वेद ज्ञानराशि है। वर्तमान समय में विज्ञान के जितने भी शोध कार्य हैं वे सभी वेदों में पूर्व से ही विद्यमान हैं।

डॉ. प्रसाद ने आगे कहा कि वर्तमान में गणित का जो 'पाइथागोरस' का सिद्धांत है वह भी वेदों द्वारा प्रतिपादित 'शुल्व सूत्र' ही है। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि वेद किसी पुस्तक का नाम नहीं बल्कि वह तो ज्ञान का सागर है, जिसे मथने की आवश्यकता है। वेद सार्वभौमिक सत्य है, वह अपौरुषेय है। स्वामी दयानन्द ने कहा था–'वेदों की ओर लौटे'। तो आइए, हम सभी मिलकर विश्व को आर्य बनाएँ–**"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।"**

'वेदोऽखिलोधर्ममूलम्' कह कर आचार्य सिकन्दर शास्त्री ने धर्म, शब्द की व्याख्या प्रस्तुत की। उन्होंने महर्षि मनु द्वारा प्रतिपादित धर्म के लक्षणों पर विशद् व्याख्यान दिया।

विद्यालय परिसर में आए प्रबुद्ध जनों ने विभिन्न आख्यानों द्वारा श्रावणमास की महत्ता पर प्रकाश डाला साथ ही साथ श्रावण मास में कर्म के औचित्य पर भी प्रकाश डाला।

सत्र के अंत में विद्यालय के श्री महात्मा नारायण दास ग्रोवर खेल परिसर में वृक्षारोपण का कार्य किया गया जहाँ प्राचार्य महोदय, वरिष्ठ शिक्षक, गणमान्य अतिथियों के साथ ही बच्चों ने भी भाग लिया। पुनश्च सत्रावसान प्राचार्य श्री वासुकि प्रसाद, डेहरी के धन्यवाद ज्ञापन एवं शान्ति पाठ के साथ सम्पन्न हुआ।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**